मंजिलें और भी हैं

काव्य-संग्रह

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक

के.बी.एस प्रकाशन दिल्ली

ISBN No :- 978-93-90580-92-7

कर्म-बद्ध-संकल्प

के.बी.एस प्रकाशन दिल्ली

मुख्य कार्यालय :- 111 - ए.जी-एफ, आनन्द पर्वत, इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110005

शाखा कार्यालय :- 26, प्रभात नगर, पीलीभीत रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश

शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटकेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301

दूरभाष :- 9871932895, 9868089950

e-mail :- kbsprakashandelhi7@gmail.com

मूल्य : 200.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2021 **© बिमला रावर सक्सेंना**

मुद्रक :- कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

Book Name - MANZILEIN AUR BHI HAIN
by BIMLA RAWAR SAXENA

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मन की बात...

सहृदय पाठकगण मेरा नूतन काव्य-संग्रह "मंज़िलें और भी हैं" आपके मन की अदालत के समक्ष प्रस्तुत है। बहुत-सी बातें मन में उमड़ती-घुमड़ती रहती हैं, जो अभिव्यक्त होती हैं, बातों के द्वारा, डायरी लिखकर, या साहित्य की किसी विधा द्वारा, संगीत अथवा चित्राकला द्वारा भी। छोटी-सी उम्र में ही पढ़ने से नाता जुड़ गया था। अम्मा जी का धार्मिक पुस्तकें पढ़ना धर्म का और दिनचर्या का हिस्सा था, गीता, रामायण को कंठस्थ करने का नियम बना रखा था, जो बाद में उनके बहुत सहायक बने, जब अस्सी वर्ष की अवस्था में उनकी आँखों ने उनका साथ छोड़ दिया। उन्हें पत्र-पत्रिकायें, कहानियाँ, कवितायें तथा उपन्यास पढ़ने का भी बहुत शौक था। उन्हें अपने ही आराध्य के लिए स्वलिखित भजन गाने का भी बहुत चाव था। वही शौक हम भाई-बहिनों के हिस्से भी आया। मैंने मात्र नौ वर्ष की आयु में प्रेमचंद रचित उपन्यास निर्मला सबसे पहले पढ़ा था। निर्मला ने उस उम्र में भी मेरा हृदय झकझोर दिया था। उसके बाद अनगिनत उपन्यास, कहानियाँ भी पढे, लेकिन मेरे विचारों की अभिव्यक्ति ने काव्य रूप में ही बाहर आना शुरू किया। संभवतः शायद संगीत में मेरी रुचि होना इसका वास्तविक कारण रहा होगा। यदि संगीत में मेरी रुचि भी इसका कारण रही हो, तो इसी कारण प्रारम्भ में छोटे-छोटे गीत बनकर, फिर धीरे-धीरे कविता बनकर, कवितायें कागजों पर उतरने लगीं। बड़े होने के साथ कभी-कभी, विद्यालय में होने वाली सभाओं में मैंने कविता पढ़ना शुरू किया तो शिक्षक सखियों और साथियों से प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलने लगा। मेरी माँ तो मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा बनकर मेरे साथ थी ही। मात्रा सत्तरह वर्ष की आयु में मेरी नौकरी एक अध्यापक के रूप में शुरू हो गई। फिर नौकरी और आगे की पढ़ाई भी साथ-साथ ही चलते रहे। मेरे जीवन का शादी के बाद फिर एक नया अध्याय शुरू हुआ। कवितायें पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगीं। आसपास, घर-परिवार, बेटी की विदाई देखना और दिल से उसको दुआयें देना कि वह अपने जीवन में सुखी रहे। एक दुआ यह भी थी कि प्रभु इस लड़के-लड़की का जीवन सुख-शांतिमय रहे।

घर-गृहस्थी, नौकरी, बच्चे, बड़ा समृद्ध संयुक्त परिवार। एक लंबा अंतराल भी आया जब लिखना-पढ़ना छूट-सा गया। कभी-कभी

जब बहुत अधिक दुख-दर्द खुद पर आते या समाज, देश, विश्व में होने वाली दुखदाई गतिविधियां, सड़क पर तड़पते इंसान, किसी दुर्घटना का शिकार, जिसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा, लोग अनदेखे ही आगे बढ़ रहे हैं, भूख से मरते लोग, घरेलू झगड़ों के कारण सहमे बच्चे, बहुत बार अपनी ही कक्षाओं के बच्चों से बात होती थी। ये सब चीजें, गुस्सा, कुंठा, तनाव पैदा करती थीं, लेकिन समस्याओं को हल न कर पाने का दर्द, हृदय में तूफान उठाता था, और मेरी यही कुंठा कविता बनकर कागज़ पर उतर पड़ती थी। चुपके-चुपके कागजों को कपड़ों के बीच छिपाकर रखती रही।

विद्यालय से सेवा निवृत्ति के पश्चात अलमारियों से अपने ये कागज़ निकालने शुरू किए और ईश्वर की अपार कृपा से मेरे बेटे की उम्र के एक मसीहा मिले जिन्होंने मेरी कविताओं को पुस्तकों के रूप में लाने में, मार्गदर्शन और सहयोग किया। पिछले लगभग बीस वर्ष से मेरे काव्य-संकलन प्रकाशित हो सके, तो मेरे प्रिय बंधु, पथ-प्रदर्शक, सहायक श्री केदार नाथ शब्द मसीहा के परिश्रम से ही संभव हुआ। वरना उम्र के इस मोड़ पर उनकी ये दीदी माँ कुछ नहीं कर सकती थी। शायद मेरी कवितायें कागजों में बिखरी , और अलमारियों में कैद ही रह जातीं । प्रभु उन्हें सदैव सुख-शांति और समृद्धि प्रदान करें, ऐसी मैं कामना करती हूँ । मेरी पुस्तकों के प्रकाशक संजय 'शाफ़ी' जी को स्नेहिल आशीष, जिनकी मदद के बिना पुस्तक रूप में कविताओं का आना असंभव था।

अपने पाठकों से एक बात और भी कहना चाहती हूँ कि कविता में केवल कवि अथवा कवयित्री का अपना ही दुख-सुख वर्णित नहीं होता है, अपितु घर से, अपने तन-मन से लेकर, सम्पूर्ण संसार, मानव, पशु, पक्षी, प्रकृति का कण-कण उसका अपना रचना संसार होता है, जहाँ तक वह देख और महसूस कर पाता है। सभी का दुख-सुख कलम से निकलकर कागज़ पर प्रवाहित होता है। जो विचार उसके मन में आते हैं, उसकी आत्मा महसूस करती है, वह उनको अभिव्यक्त करता है।

मेरा यह काव्य-संकलन आपको समर्पित है। आशा है यह सीधी सरल बोलचाल की भाषा में लिखी मेरी कवितायें आपके हृदय को स्पर्श कर आनंदित कर सकेंगी। मुझे आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

बिमला रावर सक्सेना
नई दिल्ली

मंज़िलें और भी हैं

मनुष्य का जीवन भी किसी कविता की तरह ही है, कभी इसमें सुख है तो कभी दुख, और साथ ही जीवन का दर्शन भी। कविता उन लोगों के लिए तो जीवन मित्र की भांति है, जो किसी कारण अकेले रहना पसन्द करते हों। कविता को मैं अक्सर दो मनों के बीच स्थापित हो जाने वाला पुल कहना पसन्द करता हूँ। वैसे कवि और पाठक की मित्रता भी अनोखी है, जो कवि की रचना स्थापित करती है। जीवन के पलों को शब्द देना, और फिर सुख-दुख से मुक्त हो जाना .... कितना आनंददायी होता है.... पाठक तो कविता में शब्द चित्र देखता है, और उन पलों और परिस्थितियों को आत्मसात करता है। यह भावना कितनी निर्मल और सुदृढ़ है, जहाँ शब्द मुखर हो जाते हैं और संबंध, कवि गौंण हो जाते हैं। कविता स्वयं को रिक्त करने का साधन भी है। बिना रिक्ति के इस मन के अन्दर कुछ भरा भी तो नहीं जा सकता न!

बड़ी दीदी बिमला रावर सक्सेना से भी मेरा संबंध ऐसे ही जुड़ा था। उनकी कृति 'अनुभव' जब मुझतक पहुँची और मैंने पढ़ा, तब हमारे बीच कोई सीधा संबंध नहीं था, लेकिन कविता से मन का संबंध ऐसा जुड़ा कि अब दो दशक बीत गए, और कल की ही सी बात लगती है। बिमला रावर सक्सेना जी की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, और हर पुस्तक का मैं पाठक रहा हूँ। उनके द्वारा रचित कवितायें छंद मुक्त कविता हैं, उन्मुक्त होकर जब विचरती हैं, और उनकी रचनाओं में छन्द, विधा, आकार को वे बहुत सुगमता से स्वतः ही लाँघ जाती हैं। पाठक विचार बिन्दु तक पहुँचकर मानसिक शांति का अनुभव करता है। अपने इस मुक्त रूप में भी कविता तब तक 'अ-कविता' नहीं होती, जब तक वह अपने मूल शाश्वत गुणधर्म को पोषित करती रहती है। और कविता को काव्य बनाये रखने के लिये, उसके मूल गुणधर्म का अनुपालन करते रहना नितान्त आवश्यक एवं अनिवार्य है। कविता का यह मूल शाश्वत गुणधर्म है, उसकी स्वयं की लयबद्धता। बिमला रावर सक्सेना द्वारा सृजित लय-सुर-ताल से च्युत रचना कविता की श्रेणी से निकल कर स्वतः ही गद्य में परिवर्तित हो जाती है, लेकिन उसका वैचारिक सौंदर्य स्थापित रहता है, और यही कविता और कवयित्री की सफलता है।

कवयित्री बिमला रावर सक्सेना अपने बचपन से ही गीतों, उपन्यासों, कविताओं जैसे साहित्य से जुड़ी रही हैं। उन्होने एक बेटी, एक अध्यापिका, एक पत्नी, एक माँ और एक स्त्री जैसे सभी रूपों को देखते हुए जीवन के आठवें दशक को पार किया है, और निरंतर क्रियाशील हैं अपने रचनाकर्म में, उनकी कविताओं में सहज, सरल और परिस्थिजन्य या कहिए स्वतः उत्पन्न भाव देखने को मिलते हैं। उनकी रचनाओं में सहजता से मनोभावों को प्रस्तुत करने का प्रयास साफ़ दृष्टिगोचर होता है। उनकी कविता में मन के भाव बहते हैं, और कविता आगे बढ़ती जाती है।

जब बस जाता रोम-रोम में
नाम किसी इक अपने का
जब वह बन जाता है नायक
रोज़ रात के सपनों का
तब निकलें जो शब्द हृदय से
महाकाव्य बन जाते हैं
इस कविता का अर्थ समझता
महाकवि या दिलवाला

वाकई जीवन में जब प्रेम का अंकुर फूटता है तो हर ओर बसंत ही छा जाता है, और हर ओर प्रेम ही दिखाई देता है। ऐसा नहीं कि प्रेम कोई चश्मा है .... वह तो अपनत्व में जुड़कर बहने वाली वह नदी है जिसके किनारे मिलते हैं और मिलने को आतुर भी रहते हैं। वह नायक और कोई नहीं प्रीतम ही होता है, जो सपनों का राजकुमार होता है, और उसकी याद में रचित गीत, कविता कितनी मधुर और मनभावन लगती है .... इसे समझने के लिए बेशक महाकवि होना जरूरी न हो पर .... दिलवाला होना बहुत जरूरी है।

रोज़ दूसरों से मिलते हैं आप
कुछ को समझते भी हैं, सलाह भी देते हैं
लेकिन क्या कभी खुद को भी सुनते हैं आप
क्या कभी खुद से भी कुछ कहते हैं आप

मात्र चार पंक्तियाँ और सम्पूर्ण स्वाध्याय का निचोड़। हम अपने जीवन

में ऐसा ही तो करते हैं। हमारे पास सभी से बात करने का समय होता है, हम राजनीति, फिल्मों पर चर्चा और आपसी बातों में घंटों को रोज़ गुज़ार देते हैं, लेकिन खुद से बातें करने का हमारे पास समय तो क्या विचार भी मन में नहीं आता। हम सब कुछ सीख गए हों लेकिन मौन, मंथन और मनन को हम कहीं भूल गए हैं। और अगर कोई इसे जानता है, इस पर अमल करता है तो .... हर इन्सान में काबिलियत है कि वह खुद को खुदा बना सकता है अपना। और इस बात की तस्दीक भी बिमला रावर जी करती हैं :-

खुद से मिलकर खुदा से मिल लेंगे आप
दूसरों की तो सुनते हैं, कुछ अपनी भी सुनिए आप

गाँधी जी ने अपने जीवन काल में स्वाध्याय को जीवन में अपनाने के लिए कहा था। इस तरह अपने पूरे दिन का लेखा-जोखा कीजिये कि जैसे आप अपने आपको जांच रहे हों, जहाँ कोई कमी मिले, उसे अगले दिन से समाप्त कीजिये या कम करने का प्रयास कीजिये। इस तरह एक बेतरीन इन्सान बना जा सकता है, जो स्वयं में परमात्मा का प्रतिरूप होगा। इसके समर्थन में एक अन्य कविता में उन्होने लिखा है:-

ढूँढ रहा तू जिसको मानव, पूछ रहा तू जिसका पता
उसको ढूँढ कहाँ तू पाये, वह तो तेरे मन में बसता

इसका मतलब बहुत स्पष्ट है कि मनुष्य को परमशक्ति प्रकृति ने अपने आप में सम्पूर्ण पैदा किया है, लेकिन विकारों में पड़कर मानव अपने पतन को स्वयं निमंत्रण देता है, खुद से दूर होकर। हम सभी अपने जीवन में इसी बीमारी से ग्रस्त हैं, हम अपनी कमियों को दूर करने के बजाय दूसरों पर उँगलियाँ उठाना ज़्यादा पसन्द करते हैं।

मिटने न दो विश्वास को
न टूटने दो आस को
कम कभी होने न दो
कुछ सीखने की प्यास को

जीवन की एक बहुत बड़ी सीख है ये, हम निरंतर सीखते हैं और हमारा जीवन समृद्ध होता जाता है। यह जो सीखने की प्यास है, जीवन के लिए ऊर्जा का काम करती है, हमारी जीवन संगिनी, साथी और मार्गदर्शक है। जीवन की सकारात्मकता भी यही है कि खुद को परिष्कृत करें, और दूसरों को परिष्कृत होने में मदद करें। बतौर एक कवयित्री बिमला रावर सक्सेना अपने जीवन में निरंतर इस अपनी ही बात को मंत्र मानकर चल रही हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति, संगीत, बादल, वर्षा, वर्तमान राजनीति के साथ सबसे अहम बात है स्वाध्याय और आत्मचिंतन का सम्मिश्रण।

जीवन के हर मुकाम से गुजरते हुए लिखी गई ये सभी कवितायें एक बेहतर जीवन की आशा को बलवान करती हैं। और काव्य-संग्रह के नाम 'मंज़िलें और भी हैं' को पूरी तरह से सार्थक सिद्ध करती हैं। चरैवेति, चरैवेति अर्थात् चलते रहो का हम सभी को संदेश देती हैं।

मैं अपनी बड़ी दीदी, दीदी माँ बिमला रावर सक्सेना जी को इस काव्य-संकलन के लिए अपने दिल की अतल गहराइयों से शुभकामनायें देता हूँ, और कामना करता हूँ कि वे स्वस्थ, सक्रीय और सृजनशील रहते हुए साहित्य और समाज को समृद्ध करती रहें।

भवतु सब्ब मंगलम।

केदार नाथ शब्द मसीहा
नई दिल्ली

अनुक्रमांक

बुद्धिप्रदा शारदा माँ	15
दिलवाला	16
माज़ी के हादसे	19
पुराने ज़ख़्म नये अफ़साने	20
मानवजाति से एक प्रश्न	21
इन्सानियत के धर्म पर चलें	23
आँसुओं की खेती	28
मैं प्रकृति में समा जाऊँ	30
भावनाओं की अभिव्यक्ति	31
एक भला इन्सान ही काफ़ी है	32
नई पुरानी मान्यतायें	33
मेरी धरती माँ	34
मेरे अन्दर छुपी बसी लड़की	35
मेरी किताबों से	36
यह मानव की विडम्बना ही है	37
साथी का साथ	38
अहसासों की भाषा	39
अब तुम आओ बाँके से	40
ज़िन्दगी एक उपन्यास	41
इसको ही कहते हैं बचपन	43
दिल से दिल को खोलिये	44
अतीत से इतने न जुड़े रहो	45
हमारे वो पुराने साथी	46
कुछ न मिला उदास हो कर	47
बन कर मेघदूत जाओ तुम	48
हाल-ए-दिल किसको सुनायें	49

मृगमरीचिका के पीछे	50
छुपा वो तेरे मन की गुफा में	51
ख़ुद से ही नाता तोड़ लिया	52
अधूरा मानव	53
जीवन की डगर	54
काँटा सन्देह का	55
हम भगवान बुद्ध की बात समझ लें	56
तो दस दरवाज़े खुल जाते हैं	57
अस्तित्व ख़तरे में क्यों	58
निकल आया कोई	59
जीवन के कुछ पन्ने खोलें	60
बीती बात	61
सूरज, बादल और पवन	62
सपने बुन लिये	63
मेरे घर के हर कोने में	64
खिलंदड़े बादल	65
दिल डूब सा रहा	66
मिल जाये उजाला मुझको	67
हम रहेंगे या न रहेंगे	68
इन्सान क्या है	69
अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर	70
जीवन संघर्ष के अभ्यस्त	71
क्यों आ जाते	72
ऐसा क्या गुनाह किया	73
प्रीत की यह रीत है	74
हम शूल चुनते रह गये	75
हैं हर क़दम पे ठोकरें	76
धरा से आकाश तक	77

मिटा दे उन यादों को	78
हमराह	79
दिलों में दूरी	80
रोज़ ये रातें	81
रोज़ एक दिन	82
मेरा अस्तित्व कहाँ है?	83
हृदय से गीत संगीत निकालें	84
बहती हुई यादें	85
क्यों मशीनी ज़िन्दगी	86
बेईमानी की नींव पर	87
बहते सपने	88
जीने के सहारे	89
दिल लगाने की सज़ा	90
मैं क्या करूँ	91
किधर रौशनी है	92
कुछ समय और	93
निमिष भर	94
निष्फल कामना	95
दर्द की लहरें	96
क्यों?	97
रीता आँचल	98
दर्द की चूनर	99
बढ़ते रहो	100
तेरी ख़ुशबू मीठी सी	101
ज़िन्दगी कितनी बेमानी	102
कुछ दर्द सा क्यों	103
दो पल के लिये	104
कुछ बीते क्षण	105

वेदना सृजन की	106
मेरे देशवासियों	107
एक-एक ग्यारह हो जाते	108
दिल भी कह उठता है	109
प्यारी जन्मभूमि मेरी	110
जल भरे बादल	111
धरती अम्बर के ख़ज़ाने	112
अन्तर में ज्योति किरण	113
तुम मुसकाना	114
कुदरत के साथ	115
इन्सान इतना स्वार्थी क्यों	116
निराश न होना तुम	117
ज़िन्दा उसे कैसे करूँ	118
कल छोड़ आई मैं माँ का घर	119
कुल मिलाकर	120
आओ परदेसी सावन ऋतु आई	121
ज़िन्दगी एक अनबूझ पहेली	122
जंगल की रसभरी हवायें	123
मंज़िलें तो और भी हैं	124
आँखों में उतरा दर्द	125
प्रश्नों का दलदल	127
लोकतन्त्र का बजट	129
आज़ादी के नशे में लोग	131
मैं कलियों सी मुस्काऊँ	133

बुद्धिप्रदा शारदा माँ

बुद्धिप्रदा शारदा माँ है तुझको नमन शतबार
सद्‌बुद्धि दान कर दूर करो माँ मेरे हृदय का अन्धकार
तेरी कृपा जब जो तभी सदियों में आता कालीदास
तू ही तम को दूर करके माँ भरती है बुद्धि में उजास
हे सरस्वती माँ तुमसे ही होता है चारों ओर प्रकाश
आदर पाये सदा जगत में तुम हो माता जिसके साथ

ज्ञान ज्योति तुम्हारी उज्जवल करे हमारे कर्म
इसीलिये कहते हैं विद्या सबसे बड़ा है धर्म
कृपा तुम्हारी सदा हो हम पर करना यह उपकार
बुद्धिप्रदा शारदा माँ है तुझको नमन शत बार

जब हो तेरी कृपादृष्टि गूँगा भी तानसेन बन जाये
जिह्वा पर संगीत जो आये युग-युग तक अमर हो जाये
हे श्वेतकमलासीन धवलवस्त्र धारिणी माँ
हे हँसवाहिनी वीणाधारिणी हे भगवती माँ
हे कल्याणी, दयादायिनी माँ सरस्वती शारदा
है नमन शत बार तुमको सृष्टि की बुद्धिप्रदा

रहे हमारे अन्तस्तल में तेरा नाम ही बारम्बार
बुद्धिप्रदा शारदा माँ है तुझको नमन शत बार

ooo

दिलवाला

अपनों को अपना घर भी जब
कोई अकेला रहता है
अपनों के ठुकराने का दुख
मन ही मन जब सहता है
तब दुनिया लगती है सूनी
हर मुश्किल लगती है दुगनी
इस दुख को पी जाने का दुख
दिल जाने या दिलवाला

अपने दिल पर बोझ लिये जब
हमको जीना पड़ता है
काँटों की नोकों-सा हर पल
कुछ-कुछ गड़ता रहता है
कितने बोझ उठायेगा दिल
कितने दर्द छुपाएगा
कितने काँटे सह पाएगा
कैसे जाने दिलवाला

सूनी-सूनी राहों में जब
मिल जाता कोई अपना
लगता कुछ पाया जीवन में
सत्य हुआ कोई सपना
शांति हृदय को मिल जाती है
जगमग राहें होती हैं
अपनों से मिल पाने का सुख
जाने कोई दिलवाला

हरी-भरी राहों के सपने
हरे-भरे ही होते हैं
जगमग राह अगर मिल जाये
ख़्वाब सुनहरे होते हैं
कितनों के सपने सच होते
कितनों के खो जाते हैं
कैसे सपने सदा सताते
दिल जाने या दिलवाला

बाँसुरिया तेरी यादों की
जब-जब मुझे बुलाती है
दर्द भरी तानों से अपनी
मुझको गीत सुनाती है
ग़म का सागर भर जाता है
दिल के हर इक कोने में
यादें कैसे तड़पाती हैं
दिल जाने या दिलवाला

क्यों अतीत की राहों में
जो छूटा वह फिर मिला नहीं
क्यों जीवन में अपना कोई
रूठा तो फिर मना नहीं
जब भी टूटा दिल का शीशा
जोड़ नहीं पाया कोई
चुभी हुई किरचें दिल पर हैं
फिर भी जीता दिलवाला

भोली आँखों के दर्पण में
जब भी कोई झाँक गया
देखा उसकी आँखों में
और क़ीमत उसकी आँक गया
कितना लेना कितना देना
इन आँखों के मालिक से
क्या ऐसी सौदेबाजी
करता है कोई दिलवाला

दिल की क़ीमत लगा सका न
अब तक कोई दुनिया में
दिल तो है अनमोल रतन
मिल नहीं सकेगा दुनिया में
फिर भी जो ढूँढेगा उसको
उसे मिलेगा यह हीरा
हीरे की क़ीमत तो जाने
हीरे जैसा दिलवाला

जब बस जाता रोम-रोम में
नाम किसी इक अपने का
जब वह बन जाता है नायक
रोज़ रात के सपनों का
जब निकलें जो शब्द हृदय से
महाकाव्य बन जाते हैं
इस कविता का अर्थ समझता
महाकवि या दिलवाला

○○○

माज़ी के हादसे

माज़ी के हादसों को किया याद रो लिये
इस तरह हमने दाग़ जिगर के हैं धो लिये

दिल में उठाये बोझ हज़ारों जिया किये
ख़ुद ही लगाये घाव और ख़ुद ही सिया किये
राहों से अपनी फूल हटा ख़ार बो लिये
इस तरह हमने दाग़ जिगर के हैं धो लिये

ज़ुल्मो-सितम को हँस के हमेशा सहा किये
प्याले ज़हर के जो भी मिले हम पिया किये
काँटे मिले तो फूल समझकर उनपे सो लिये
इस तरह हमने दाग़ जिगर के हैं धो लिये

दुनिया की बेवफ़ाई पे हम हँस दिये ऐ दोस्त
कैसे भँवर के जाल में हम फँस गये ऐ दोस्त
ये ज़िन्दगी के क़र्ज़ थे हमने हैं जो दिये
इस तरह हमने दाग़ जिगर के हैं धो लिये

○○○

पुराने ज़ख़्म नये अफ़साने

जब भी उसने दिये नये ग़म हमें
हमने अफ़साने उनके लिख डाले
हमने अपने पुराने ज़ख़्मों से
कुछ नये फ़साने लिख डाले

हर विरह दे गया कुछ गीत
आहों से इक नई ग़ज़ल निकली
दिल में जब कभी धुआँ सा उठा
होठों से धुन नई मचल निकली

याद करके किसी को रोये क्यों
क्यों न अब संगदिल बनें हम भी
उनको जब बेवफ़ा समझ ही लिया
क्यों न ख़ुद से वफ़ा करें हम भी

हमने अपने को बहलाने के लिये
अब तो अनगिन बहाने लिख डाले
अपने पुराने ज़ख़्मों से
कुछ नये फ़साने लिख डाले

ooo

मानवजाति से एक प्रश्न

आज मानवजाति से केवल एक प्रश्न पूछना चाहती हूँ
उस एक प्रश्न में ही अनेक प्रश्न छुपे हुए हैं
एक के बाद एक प्रश्न जुड़ता जायेगा

तो हे मानव!
परमात्मा के दिये उपहारों को, कुदरत के करिश्मों को
परमात्मा की सृष्टि को, हवा धूप और वृष्टि को
मनुष्य पशु-पक्षी पेड़-पौधे, पर्वत जंगल वन-उपवन को
ईश्वर की सारी अनुपम देन को, क्षति पहुँचाने का
तुम्हें क्या अधिकार है इन्हें नष्ट करने का
आकाश से पाताल तक मिले ख़ज़ाने को
सागर तल में भरे अमूल्य धन को
धरती के अन्दर दबे खनिज पदार्थों को
तुम कितनी निर्दयता से हानि पहुँचा रहे हो

हे स्वार्थी मानव!
बहुत से पशु-पक्षी तुम्हारी भूख और लालच के शिकार हो गये
कुछ नस्लें नष्ट हो गईं कुछ नष्ट होने के कागार पर हैं
जंगल काट-काट कर पशुओं को बेघर कर दिया
पेड़ काट-काट कर शहरों को पक्षी रहित कर दिया
आज घरेलू चिड़ियाँ दिखाई नहीं देतीं
जो प्रातःकाल आँगन में आकर चहचहाती थीं
जब पेड़ नहीं रहे तो उनके घोंसलें कहाँ बनेंगे
नन्हें-नन्हें पक्षी कहाँ रहेंगे
इसका कारण मानव की ज़मीन की भूख है

जंगल खेत पहाड़ कोई नहीं बच रहा इस भूख से
हे प्रकृति के लिये दानव!
हरे-भरे जंगल पहाड़ों को विनष्ट करके
बनाये जा रहे हैं कंक्रीट के जंगल
उन गगनचुम्बी जंगलों में से झाँकते हैं फल-फूल नहीं
अपितु खिड़कियों में से झाँकते हैं मनुष्यों के चेहरे
जिनको ज़मीन पर चलते आदमी चींटियों से नज़र आते हैं
जो न आसमान को, न धरती को छू पाते हैं
जंगल पहाड़ नष्ट हुए तो बादल भी रूठकर उड़ गये
उनके पंख नये स्थानों की खोज की ओर मुड़ गये
वर्षा ने मुख फेर लिया धरती प्यासी मरने लगी
जल को रोकने को पेड़, पहाड़, घास न होने से
नदियों में बाढ़ आने लगी जन धन की बर्बादी होने लगी
कहीं हैं धूल मिट्टी के बादल दरक रही धरती की छाती
पानी की कमी से परेशान हैं मानव पेड़-पौधे पशु-पक्षी
सबके लिये हो रही है पानी की कमी
वर्षा के बिना अनाज नहीं दे रही भूमि
खुली स्वच्छ हवा की कमी से पर्यावरण दूषित हो रहा है
धड़ाधड़ पेड़ों की कटाई ने धरती को बंजर बना दिया है
मानव ने धरती में छुपे ख़ज़ाने भी ख़ाली करने शुरू कर दिये हैं
खनिज भंडारों का शोषण हो रहा है, संभवतः आने वाले वर्षों में
बहुत से खनिज भंडार ख़ाली हो जायेंगे रह जायेंगी उनकी यादें

मानव ने तो सागर को भी नहीं छोड़ा
उसके अन्दर के ख़ज़ाने से जी नहीं भरा
तो अब उसकी धरती पर भी अधिकार जमा रहा है
नये-नये तरीक़ों से सागर की धरती हथिया रहा है

नदियों में कूड़े के ढेर और रासायनिक कूड़ा डालकर
उनके निर्मल जल को प्रदूषित कर रहा है मानव
गंगा यमुना जैसी नदियों को नालों में परिवर्तित कर रहा है मानव

कैसे होंगे वो दिन -
जब धरती पर चमचमाती चौड़ी सड़कें होंगी
अम्बर स्पर्श करते कंक्रीट के जंगल होंगे
लेकिन उनमें हवा और धूप नहीं होगी
धूप की कमी पूरी करने के लिये विटामीन डी के इंजेक्शन लगेंगे
हवा के लिये कूलर, पंखे, ए.सी. होंगे
किन्तु प्रकृति को कोई आज तक जीत पाया है
क्या बिना धूप हवा पानी के कोई जी पाया है
इन सब प्रश्नों का उत्तर मानव को स्वयं खोजना है
उसे धीरे-धीरे मरना है बिना ऑक्सीजन के
या एक सुन्दर जीवन जीना है प्रकृति की रक्षा करके
इसी देश में वृक्षों की पूजा होती थी देवताओं की तरह
पीपल बरगद नीम बेलवृक्ष किस-किसी की बात करें

हे जंगल के लिये अमंगल मानव!
अनगिनत जड़ी, बूटियाँ, जीवनदायिनी संजीवनी
सबका नाश करके इन्सान कैसे रह पायेगा
बिना लकड़ी के घर कैसे बना पायेगा
बिना लकड़ी के तो काग़ज़ भी न बन पायेगा
फिर कैसे वह अपनी बुद्धिहीनता के परिणाम लिखकर
नई पीढ़ी को सतर्क कर पायेगा
बिना लोहे के तो कंक्रीट के जंगल भी न बन पायेंगे

जब तब बाढ़, सुनामी जैसे भयंकर दानव आकर सतायेंगे
प्रदूषण से सूर्य की किरणें तक नहीं बची हैं
पृथ्वी के आसमानी आवरण में छेद करके धरा तक आ पहुँची है
यह कष्टदायी छिद्र प्रदूषण का ही परिणाम है
मानव तुम्हारे लालच की भूख तो अब तक बची है
अगर तुम अब भी न सँभले
तो प्रदूषण से ध्रुवों की बर्फ़ गल-गल कर
तुम्हें निगलने आ जायेगी
गर्मी तुम्हें जला देगी
तुम्हारे लालच और स्वार्थ की भूख से जुड़े
बहुत से प्रश्न अभी शेष हैं
अब तुम स्वयं विचार करो कि क्या श्रेष्ठ है
प्रकृति को बचाना या उसका विनाश करना
बिना सोचे समझे नष्ट करना
या प्रकृति से नाता जोड़कर उसकी सराहना करना

ooo

इन्सानियत के धर्म पर चलें

अतीत की यादें बड़ी गहरी होती हैं
लेकिन कोई-कोई याद, कोई-कोई बात
आज भी उतनी ही सटीक होती है
जितनी वह दशकों पूर्व थी
जो प्रश्न हृदय तब पूछता था
आज भी वही पूछ रहा है
विद्यालय की बोर्ड परीक्षा के बाद
सखियों ने मिलकर बनाया कार्यक्रम
पेपर समाप्त होने के बाद देखेंगे एक फ़िल्म
बहुत ख़ुश थे हम सब
मैंने उससे पहले 'शहीद' और 'बैजू बावरा' देखी थी
मेरा संगीत प्रिय हृदय 'बैजू बावरा' के गीत
आज भी प्रेम से गुनगुनाता है
'शहीद' का गीत कौन भूल सकता है -
'वतन की राह में वतन के नौजवाँ शहीद हों'
फिल्म 'धूल का फूल' नई-नई आई थी, दिल से देखी
किशोर हृदय एक गीत में उलझ कर रह गया
'तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा'
क्यों नहीं समझ पाते हम
कवि के दर्द भरे संवेदनशील हृदय की बात
समस्या आज भी वही है
भारत विभाजन के दुष्परिणाम दोनों पक्षों ने सहे
दोनों ने घर परिवार, अपनी जन्मभूमि छोड़ने के दर्द सहे
कितना खोया कितना पाया, क्या खोया क्या पाया

जो पाया वह भाया कि नहीं भाया
जो भाया वह पाया कि नहीं पाया
हृदय में प्रश्नों के अम्बार लग गये
विभाजन से किसने क्या पाया, कितना पाया
कोई स्वयं को समझ नहीं पाया
क्षण भर का संतोष बन गया सदियों का असंतोष
शायद किसी को भी नहीं मिल पाया पूर्ण परितोष
समस्याएँ आज तक सुलझ नहीं पाई
वे तो बालों के गुच्छों सी उलझती गईं
कब सुलझ पायेंगी कोई नहीं जानता
काश कोई इनका समाधान कर सकता
बात यहीं समाप्त नहीं हुई
स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद समस्याएँ और बढ़ीं
भारत राष्ट्र के भाषावार राज्य बनकर टुकड़े हो गये
इस तरह सरकारी काग़ज़ों पर बँटवारे होने प्रारम्भ हो गये
हिन्दी राष्ट्रभाषा बनकर रह गई केवल संविधान में
भाषाई राज्यों में हिन्दी का विरोध भी होने लगा
बच्चों के विद्यालय के प्रवेशपत्र भरने से शुरू होता है
एक नया बँटवारा जिसमें भरना होता है एक शब्द
ऐसा शब्द जो बच्चों को आपस में बाँटना सिखाता है
वह शब्द है धर्म और जाति भरना
सर्वधर्म एक का नारा फेल हो रहा है
अब प्रवेशपत्र में भरना है कि आप हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, जैन
ईसाई, सिक्ख किस धर्म के हैं
आपकी जाति क्या है अनुसूचित, पिछड़े, उच्चजाति, निम्नजाति
छूत, अछूत, जाट तथा अनेक नये जुड़ते नाम हैं
इस प्रकार नन्हे बच्चों के दिमाग़ में जाति, वर्ग नाम भर दिये
जब सरकारी तौर पर भाषा, जाति, धर्म के नाम पर

जनता को बाँटा जा रहा है
तो देश में एकता केसे बढ़ सकती है
जिन धर्मों की आधारभूत स्थापना ही ऊँच-नीच रहित है
उनको भी आरक्षण की सुविधा के नाम पर
ऊँच-नीच के वर्ग में बाँटा जा रहा है
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में सब भाई-भाई
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम और कबीर जी की वाणी -
'अलख इलाही एक है नाम धराया दोय
काशी काबा एक है एक राम-रहीम'
कृष्ण करीम भी एक हैं चाहे किसी भी नाम से पुकारो
क्यों न एकता से रह कर जीवन सुधारो
क्यों संतों की शिक्षाओं को लोग भूलते जा रहे हैं
मेरा मन अब भी किशोरावस्था में सुने
उस गीत में अटका हुआ है
दिल चाहता है किसी भाँति हल हो जाये यह समस्या
तो सफल हो जाये पूर्वजों की तपस्या
रामराज्य की कल्पना मात्र कल्पना न रह जाये
किसी भाँति भारत की एकता भंग न होने पाये
सब लोग धर्म और जाति को अपने घर तक सीमित रखें
पूर्ण श्रद्धा से उसका पालन करें
लेकिन हर इन्सान को इन्सान समझें
समस्त भारतीय मिलकर इन्सानियत के धर्म पर चलें
सबके ख़ून का रंग लाल है सबमें एक-सी आत्मा होती है
फिर क्यों न हम इन्सानियत के धर्म पर चलें
जिससे देश और समाज की उन्नति होती है

ooo

आँसुओं की खेती

बरसों से वीर भगत सिंह की कहानी सुनते आ रहे हैं
खेती करने वाले पिता से उसने
एक भोला-सा प्रश्न पूछा था
पिता जी जो चीज़ खेत में बोते हैं वही उगती है न
पिता ने हाँ में उत्तर दिया
वीर बालक ने एक ही प्रश्न में साकार कर दी कहावत
पूत के पाँव पालने में नज़र आते हैं
पिता जी फिर तो हम खेतों में बंदूकें बोयेंगे
ख़ूब सारी बंदूकें उगेंगी
जिनसे हम अँग्रेजों को भगायेंगे
मैं एक गीत गुनगुना रही थी
गर्मी से बेहाल होकर बादलों को बुला रही थी
नन्हे ने उस गीत का मतलब पूछा
मैंने अर्थ बताया कि गाने वाला बादलों को बुला रहा है
बरसो रे काले-काले बादलों आकाश से उतर कर
किसान को खेती करनी है आओ बरसो धरती पर
अगर तुम्हारे पास पानी नहीं है
तो मेरे आँसू ले जाओ
उन्हें अपने अन्दर भरकर खेतों में बरसा जाओ
नन्हा ज़रा सा सोचकर बोला
माँ अगर हम आँसू के पानी से खेती करेंगे
तो पेड़ों से फलों की जगह आँसू टपकेंगे?
लेकिन आज मेरे नन्हे की बात
सही साबित हो रही है
खेतों से सचमुच आँसू टपक रहे हैं
आँसूओं से निकले अनाज, दालें, फल, सब्जियाँ

कितने महँगे हो रहे हैं
आम आदमी की पहुँच से बाहर
महँगाई सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती जा रही है
क़ीमतें आसमान तक चढ़ती चली जा रही हैं
पहले कहते थे कुछ और नहीं तो
सिर्फ़ दाल रोटी खा कर गुज़ारा कर लेंगे
किन्तु आजकल दालों की क़ीमतें तो
विशेष रूप से आसमान छू रही हैं
जीवन आवश्यक वस्तुएँ आम आदमी की पहुँच से दूर हो रही हैं
तो वह सन्तुलित आहार कैसे खाये
बीमार को दवाईयाँ खाना भी कठिन हो रहा है
इलाज करवाना है किन्तु क़ीमती दवाईयाँ कैसे ख़रीदे
आजकल जीवन सस्ता है दवाईयाँ महँगी हैं
समस्या का समाधान होता भी नज़र नहीं आता है
ऐसे में रोटी कपड़ा मकान जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे होगी
सममुच आँसुओं की खेती होगी
आँसू ही खाये जायेंगे आँसू ही पिये जायेंगे
आँसुओं से घर बनेंगे सड़क के किनारे
रात भर आँसू बहायेगा सोने वाला
गिन रहा होगा आसमान के चमकते सितारे
अचानक आ जायेगा कोई बड़ी-सी गाड़ी वाला
कुल कर उसे चला जायेगा, शक़ के आधार पर छोड़ दिया जायेगा
आँसू बहाने वाले के खेत, मकान, कपड़े
समर्पित हो जायेंगे अग्नि देवता को
फिर कोई नया आँसू बहाने वाला
आ जायेगा सड़क के आँसुओं वाले मकान में
चलता रहेगा न जाने कब तक ये सिलसिला
होती रहेगी आँसुओं की खेती

ooo

मैं प्रकृति में समा जाऊँ

जब भी प्रकृति के विशाल भंडार को देखती हूँ
प्रकृति की छोटी-बड़ी हर चीज़ को परखती हूँ
उसके चमत्कारों को निरखती हूँ
क़दम-क़दम पर हर दृश्य को देखने को रुकती हूँ
तो हृदय आश्चर्य और प्रसन्न्ता से नृत्य कर उठता है
दिल कहता है या तो मैं प्रकृति में समा जाऊँ
या प्रकृति का कण-कण मुझमें समा जाये
असीम विस्तृत गगन को बाँहों में भर लूँ
मन्द शीतल समीर को अपने शरीर में बंद कर लूँ
सागर की उठती-गिरती लहरों को
सागर के अम्बर छूते धूम मचाते ज्वार-भाटों को
हृदय मन्दिर में मूर्ति बनाकर स्थापित कर लूँ
शान्त सागर का ठहरा नीला पानी
सब कुछ मुझे बना जाता है दीवानी
कभी पर्वतों पर बिछी बर्फ़ की चादरें कहती हैं
आओ थोड़ी देर हम पर भी लेट लो
कभी पहाड़ों से कूदते झरने बुलाते हैं
आओ थोड़ी देर हमारे साथ भी बैठ लो
जंगलों के पेड़ों से सरसराती हवायें आती हैं
न जाने कितने संदेशें लाती हैं
काश मैं उनकी भाषा समझ पाती तो उनसे ढेरों बातें कर आती
बाँसों के पेड़ों से सरसर करती हवायें
कानों में बाँसुरी बजाकर कान्हा की याद दिलायें
रंग-बिरंगे फूलों की चूमती रंग-बिरंगी तितलियाँ
गाना गा-गा कर फूलों को रिझाते भँवरे
छोटी चींटी, विशाल हाथी, रंगीन सुन्दर पशु-पक्षी
प्रणाम है उस शक्ति को जिसकी रचना है प्रकृति ○○○

भावनाओं की अभिव्यक्ति

मानव के छोटे से हृदय में भगवान ने
न जाने कितनी भावनायें, कामनायें, वेदनायें, संवेदनायें
सुख-दुख, ग़मों के तूफ़ान, ख़ुशियों के सागर, व्याकुलतायें
संतोष-असंतोष न जाने क्या-क्या भर दिया है
जिन्हें सोचने समझने और अभिव्यक्त करने के लिये
मानव को अनगिनत शब्द
शब्दों को स्पष्ट और वास्तविकता से समझाने वाले अर्थ
अन्तःकरण में उमड़ते-घुमड़ते भावों को
व्यक्त करने के लिये सुन्दर-सी एक राह चाहिये
ऐसी राह जो उसकी भावनाओं को उसकी अनुभूतियों को
बताने के लिये ऐसे शब्दों का चयन कर सके
जिनसे उसकी मानसिक अवस्था वास्तविकता से
व्यक्त होकर उसे मानसिक संतुष्टि दे सके
जब उसकी आकुलता-व्याकुलता इतनी बढ़ जाती है
कि दिल और दिमाग़ एक साथ व्यग्र हो उठते हैं
तब एक स्थिति ऐसी आ जाती है
कि व्यक्ति की आन्तरिक सोच क़लम पकड़ कर
स्वतः काग़ज़ पर उतरने-बिखरने लगती है
सारे विचारों को क़लम बाहर खींच लाती है
और लिखने के बाद स्वयं भी वह जब पढ़ता है
तो विस्मित होकर कह उठता है
अरे यह सब मैंने लिख डाला है
और इसके बाद उसकी सारी आकुलता-व्याकुलता
भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ ही
शान्त हो जाती है मुखर हो उठती है निर्भव आनन्द की अनुभूति
मिल जाती है मानसिक संतुष्टि और शान्ति

○○○

एक भला इन्सान ही काफ़ी है

जीवन पथ को आलोकित करने के लिये
एक दिया ही बहुत है रौशनी के लिये
कितना ही घना अन्धकार हो
जीवन को घेर लिया हो तम-तमिस्त्र ने
वक़्त पर धोखा दे दिया हो अपनों ने मित्र ने
ऐसे समय में जीवन को ज्योतित करने के लिये
कहीं से रौशनी की एक किरण आ जाती है
जिसकी लौ मार्ग को प्रशस्त कर देती है

दीप से दीप जलता रहता है
जीवन भी अपनी राह चलता रहता है
चाहे कितने ही आँधी तूफ़ान आयें
हवाओं के झकोरे आकर दीपक को बुझायें
किन्तु दिया बुझते-बुझते भी
दूसरे दीपक को अपनी ज्योति से
प्रज्जवलित करके मानव जीवन को
राह दिखाता रहता है दूर भगा देता है अँधेरे को

इसी तरह दीपक से दीपक जलता रहता है
मानव का जीवन ज्यातिर्मय होकर सँवरता रहता है
आशा की डोर बँधी रहती है
और मानव कह उठता है
एक दिया ही बहुत है रौशनी के लिये
एक भला इन्सान की काफ़ी है
जीवन पथ को आलोकित करने के लिये
पूरे समाज को बदलने के लिये

ooo

नई पुरानी मान्यतायें

आजकल प्रत्येक मानव एक अजीब कुण्ठा,
समस्या और विडम्बना में ग्रस्त है
हर इन्सान पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच
एक अनोखी चक्की में पिसता हुआ त्रस्त है
पुरानी मान्यतायें, प्राचीन परम्परायें, सदियों से चलते हुए धार्मिक और
सामाजिक नियमों और क़ानूनों में सन्तुलन कैसे बनायें
पुरानी पीढ़ियों से अपने पुरखों से सीखी-सुनी बातें और परम्परायें
जो दिल और दिमाग़ में घर कर चुकी हैं
नई पीढ़ी के कहने से उन्हें एकदम कैसे भुलायें
कैसे दिल उन्हें तोड़-मरोड़ कर बाहर फेंक दे
कैसे एकाएक बचपन से दिल दिमाग़ में बैठी मान्यतायें
नये विपरीत मोड़ लेकर आधुनिकता में परिवर्तित हो जायें
कैसे अपने प्राचीन ग्रन्थों के श्लोकों और सूक्तियों को
साधु-सन्तों, माता-पिता, गुरुजनों की कही उक्तियों को
सुगमता से त्याग कर नई पीढ़ी की विदेशी सीखें ग्रहण कर लें
और भुला दें अपने पुरखों की धरोहर अपनी सभ्यता, संस्कृति को
संभवतः इसके लिये नई और पुरानी पीढ़ी
एक सन्तुलित मार्ग के लिये ढूँढें एक ऐसी सीढ़ी
जिस पर कुछ बातों के लिये चढ़ते रहें और
कुछ बातों के लिये समझौते के साथ उतरते रहें
एक ओर पुरानी परम्पराओं और मान्यताओं का त्यागना असम्भव है
दूसरी ओर नवीनता बिल्कुल न अपनाना भी असम्भव है
नवीनता और मौलिकता के बीच एक सन्तुलित व्यवस्था के साथ
नई और पुरानी पीढ़ी को अपनी धार्मिक, सामाजिक मान्यताओं
परम्पराओं, सभ्यता, संस्कृति को सुरक्षित रखना है

○○○

मेरी धरती माँ

पंख कहाँ से लाऊँ जो उड़ जाऊँ, ऊँचे आसमान तक
तोड़ लाऊँ सितारों के गुच्छे
और टाँक लूँ लाकर उनको अपनी साड़ी में
या सागर में कूद जाऊँ पहुँचूँ पाताल किसी गाड़ी में
झोली में भर लाऊँ ढेरों हीरे मोती
उन्हें पिरोकर पहनूँ हाथों और गले में
इन्सान का मन भी क्या-क्या चाहता रहता है
सुन्दर प्रकृति से रंगीन धरा को छोड़कर
कभी आकाश कभी पाताल जाना चाहता है
पृथ्वी पर भी तो आकाश के रंग बरसते हैं
जब घनी काली अमावस की रात में
पेड़ों पर आसमान के तारों जैसे जुगनू जगमगाते हैं
आकाश में छोटे बड़े सारे तारों के समूह
ध्रुव तारे और सप्तऋषि के साथ चमचमाते हैं
उस अँधेरी रात में न दिखने वाले तारों के समूह भी
आकाशगंगा जैसे बहने लगते हैं
जब पूर्णमासी की रात में बिछ जाती है, चाँदनी की सफ़ेद चादर
बिखर जाती है, भर जाती है रौशनी कण-कण में
वर्षा में बरसती बूँदों में झूला झूलना
सर्दी के दिनों में आँगन में धूप में लेटना
ऊँचे-ऊँचे पेड़ कालीन-सी बिछी घास
अम्बर छूते पहाड़, मीलों गहरी खाइयाँ
घाटियाँ, वादियाँ, फल-फूल, पशु-पक्षी
हमारी धरती के नीचे और ऊपर सम्पदा ही सम्पदा है
फिर मैं कहीं उड़कर क्यों जाऊँ क्यों न मैं
परिश्रम करके अपनी धरती माँ को सुन्दर और समृद्ध बनाऊँ

ooo

मेरे अन्दर छुपी बसी लड़की

जीवन के तीन चौथाई वर्ष बीत चुके हैं
बरस, महीने, हफ़्ते, घंटे पलछिन सब दिन रीत चुके हैं
अब तो रोज़ जो एक दिन सुख से बीत जाता है
लगता है मेरा जीवन कुछ बहुत बड़ा इनाम जीत जाता है
ज़िन्दगी के एक-एक दिन को सलवट झुर्री बनकर
अपना अस्तित्व सारे शरीर पर जमा चुकी है, जिन्हें गिनकर
हर दूर से देख सकते हैं कि उम्र का कौन-सा पड़ाव है
नस-नस पर रोम-रोम पर उम्र का प्रभाव है
लेकिन इस बूढ़े शरीर में अभी भी
छुपी बैठी है एक लड़की जो अभी भी
उतनी ही छोटी, चंचल, शोख़ और हँसमुख है
वह अभी भी उतनी ही सजीव है न उसे कोई सुख-दुख है
जब चाहती है पुरानी यादों को याद करके मुस्कुरा लेती है
कभी पुराने-पुराने गाने गुनगुनाती है
वो रेत के घर बनाकर फूल पत्तों से सजाना
नन्हीं बुँदियों में झूले झूलना तीजों के गीत गाना
सखियों के संग लुका छिपाई या गुड़ियों के ब्याह सगाई
कहाँ खो गई वो पुरानी सखियाँ जो आज भी
याद आती हैं जिनकी बातें, यादें सताती हैं
उम्र ने सब कुछ छीन लिया जो लौटकर
कभी वापिस न आयेगा, लेकिन मेरे अन्दर
छुपी बसी उस लड़की को न छीन सकी
जो आज भी कभी-कभी उसी उम्र की तरह मुस्कुरा लेती है

ooo

मेरी किताबों से

किताबें पढ़ना का शौक़ मुझे बचपन से था
हिन्दी पढ़ना पाँच वर्ष की आयु में सीख लिया था
स्कूल जाने से पहले कहानियाँ पढ़ना शुरू हो गया था
धीरे-धीरे पढ़ाई के साथ यह शौक़ भी बढ़ता गया
मेरा पढ़ाई का परिणाम और साहित्य का शौक़
सीढ़ी दर सीढ़ी आसमान पर चढ़ता गया
माँ मो भी पढ़ने का बहुत चाव था
हर तरह की धार्मिक, सामाजिक पुस्तकें उपन्यास, पत्र-पत्रिकायें
पुराने नये सभी कवि तुलसी, मीरा, सूर, कबीर, रसख़ान, रैदास से
पंत, निराला, बच्चन, जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद माँ को प्रिय थे
मेरा अपना संग्रह भी बढ़ चला था एक से एक पुस्तकें, पत्रिकायें
जिन्हें मैं अपने प्राणों की तरह सँभाल कर रखती थी
उनको पढ़ा अनुभव और अनुभूति से सराबोर होती गई
फिर धीरे-धीरे गृहस्थ में फँसती गई
प्रायः किताबों पर धूल जम जाती थी
जब नज़र पड़ती अन्तर से एक हूक सी उठ जाती थी
अरे मैंने इन्हें साफ़ क्यों नहीं किया धूल जम गई है
ऐसा लगता जैसे मेरी किताबें शिकायत कर रही हैं
तुमने हम पर धूल कैसे जमने दी क्या हमें भूलने लगी हो
हम ही तो तुम्हारा अतीत और भविष्य हैं
तो वर्तमान में हमें कैसे भुला रही हो
और मैं कपड़ा उठाकर धूल झाड़ने लगती हूँ
मेरी किताबों ने ही तो मुझे अभिव्यक्ति का वरदान दिया
मेरी किताबों ने ही तो मेरे अस्तित्व को नाम दिया

○○○

यह मानव की विडम्बना ही है

जीवन में बीती छोटी-छोटी और बड़ी-बड़ी बातें
जीवन के ऐसे स्मृति चिन्ह बन जाती हैं
जिन्हें भूलना भुला पाना और याद रखना सब कठिन हैं
एक-एक बात पूरे सन्दर्भों के साथ याद आती है
कभी हँसाती है कभी रुलाती है
यह मानव की विडम्बना है कि
ग़म भरी बातें अधिक याद आती हैं
ऐसे में अपनों की उपेक्षा भी कैसे करूँ
अपनों की उपेक्षा भी कैसे सहूँ
दो विपरीत परिस्थितियों को
एक साथ कैसे निभाऊँ
काँटों को फूल समझ कर कैसे ख़ुद को चुभाऊँ
जीवन की वास्तविकताओं को उनके वास्तविक रूप में
अन्तर में सहेज कर रखना
जितना आवश्यक है उतना ही कठिन भी है
जीवन का एक-एक पल अपना भी है
और अपनों के साथ भी जुड़ा है
इस सत्य को हम नकार नहीं सकते
इसीलिये न हम अपने को भूलते हैं
और न ही अपनों को भूलते हैं
वास्तव में यह मानव की विडम्बना ही है

ooo

साथी का साथ

स्वतन्त्रता और बन्धन, दोनों का अनोखा नाता है
दोनों को एक दूसरे के बिना, चैन नहीं आता है
इन्सान, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, बड़े वृक्ष-नन्हे पौधे
सबको साथी का साथ चाहिये वरना वे हैं आधे

हर प्राणी अपनी मर्ज़ी से, अपनी आदतों के साथ
अपनी इच्छानुसार जीवन जीना चाहता है
नन्हा भ्रमर भी कमल के आकर्षण में बँधकर
अंधे प्रेम में उसके अन्दर बन्द हो जाता है
किन्तु सूर्योदय के साथ कमल की पंखुड़ियाँ खुलते ही
फुर्र-फुर्र करता जेल से छूटे क़ैदी की तरह उड़ जाता है
जाकर मिलता है आज़ादी से, जिससे दिल चाहता है
शाम होते ही बन्धन खींचने लगता है
अपने कमल से मिलने, उसमें क़ैद होने पहुँच जाता है

पशु-पक्षी भी दिन भर मनमाना उड़ते हैं
शाम होते ही अपने झुण्ड में जा मिलते हैं
अपने-अपने बसेरे में पहुँच जाते हैं
चैन से रैन बिताते हैं, सवेरे फिर उड़ जाते हैं

इन्सान तो विश्वास के सहारे, पूरी उम्र के लिये
पूरा जीवन न्यौछावर कर देता है अपने साथी के लिये
यहाँ तक कि सात जन्मों के बन्धन बाँध लेता है
बन्धन और आकर्षण भी ज़रूरी हैं
साथी का साथ और आज़ादी भी ज़रूरी हैं
इनके बिना जीवन रसहीन एवं अधूरा है
साथी का साथ मिले तभी जीवन पूरा है

अहसासों की भाषा

भगवान ने मानव को हृदय दिया है, दिमाग़ दिया है
साथ ही दोनों एक दूसरे को पढ़ सकें, समझ सकें
इसके लिये अनुभूति और अहसास दिया है
भगवान की सृष्टि की हर छोटी बड़ी वस्तु को
हर कीट-पतंग, पशु-पक्षी, मानव को
यहाँ तक कि पेड़-पौधों और फूलों को देखकर
बहुत कुछ सोचने समझने, महसूस करने लगता है अन्तर
हर चीज़ अनुभूति और अहसास की भाषा में
उससे कुछ पूछती, कुछ कहती लगती है
अहसासों की यह भाषा ही सुख-दुख, वेदना-संवेदना
अर्थात् समयानुसार नवरसों को सम्प्रेषित कर
हृदय की छुपी परतों से बाहर निकल कर
कला, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान का रूप धारण कर लेती है

हाँ- अहसासों की यह भाषा हर व्यक्ति नहीं समझ पाता
इसी कारण प्रायः वह दूसरों के हृदय को पढ़ नहीं पाता
कभी-कभी स्वयं को भी समझ नहीं पाता
अपने अन्तर को अभिव्यक्त नहीं कर पाता
क्योंकि वह एक जड़ता के साथ जी रहा है
अहसासों के अभाव में उसे कोई अनुभव
प्रभावित नहीं कर पा रहा है
वास्तव में जो अहसासों के अभाव में जिया है
उसने एक अधूरा जीवन जिया है... शायद

ooo

अब तुम आओ बाँके से

बरसो राम धड़ाके से बुढ़िया मर गई फ़ाक़े से
कुछ पल बरसो नर्मी से बुढ़िया मर गई गर्मी से
निकल के बाहर आयेगी और फुहार में नहायेगी
फिर जब अन्दर आयेगी वहीं से तुम्हें निहारेगी
फिर तुम बिजली लेकर आना कड़क-कड़क उसको चमकाना
गरज-गरज तुम बढ़ते जाना ढोल नगाड़े ख़ूब बजाना

फिर तुम मूसलाधार बरसना और धरती की प्यास बुझाना
दरक रही प्यासी धरती माँ अन्तस्तल तक तर कर जाना
खेतों में तुम ख़ूब बरसना सुख मिल जायेगा किसान को
दे देना जीवन फसलों को प्राण मिलेंगे फूल पात को
कूप तालाब नदी तक जाना जंगल पर्वत वन उपवन सबके
अमृत जल से तृप्त हो उठें मन और प्राण सरस हों सबके

पृथ्वी को इतना सरसा दो अन्दर तक भर जाये जल से
कभी न आये कभी भी जल की प्यासे रहें न मानव जल से
पर तुम सीमा में ही बरसना सीमा से बढ़ना न आगे
ऐसा न हो बाढ़ आये और पशु-मानव सब घर से भागें
कुछ मानव पशु बढ़ें बाढ़ में खेत पात सब नष्ट हो जायें
इतना आगे मत बढ़ जाना घर सब तहस-नहस हो जायें
अच्छा बादल बहुत कह दिया अब तुम आओ बाँके से
बरसो राम धड़ाके से बुढ़िया मर गई फ़ाक़े से

○○○

ज़िन्दगी एक उपन्यास

यूँ तो ज़िन्दगी के हर एक पल में
एक कहानी छिपी होती है
अगर हम ज़िन्दगी के सभी पलों के पीछे
छुपी कहानियों के चित्र कल्पनाओं से खींचें और लिखें
तो पूरा उपन्यास कम पड़ जायेगा
हर क्षण पन्नों में उतरता चला जायेगा
किन्तु ज़िन्दगी की एक विडम्बना यह भी है कि
जिन पन्नों को हम जोड़ना नहीं चाहते
वे अचानक ही याद आ-आ कर
अनजाने ही ज़िन्दगी के उपन्यास में जुड़ते चले जाते हैं
दिमाग़ मे कम्प्यूटर में स्टोर होते चले जाते हैं
दूसरी विडम्बना यह भी है कि अच्छे पन्ने धीरे-धीरे
धुँधलाते चले जाते हैं
किन्तु अनचाहे पन्नों की स्याही
दिन पर दिन गहराती जाती है
शायद दुनिया के हर इन्सान की ज़िन्दगी एक उपन्यास होती है
अगर वह शुरू से लिखना शुरू करे
हर उम्र के व्यक्ति के मन में छुपा एक बच्चा
हर एक की आँखों में संचित
जवानी में जिये सुनहरे पल
और अन्तिम प्रहर का शून्य
अन्तिम पड़ाव का दलदल
उम्र भर में मिले अपनों और परायों के छल-बल
सब कहानियाँ तरतीब से मिलकर
बन जायेंगी एक ग्रन्थ
जिसे पढ़कर वह स्वयं की विस्मित रह जायेगा

लेकिन शायद- न जोड़ने वाले पन्ने ही जुड़कर
देते हैं हमें बहुत से अनुभव
दर्द और ज़माने की ठोकरों से जूझने की ताक़त भरते हैं हममें
देते हैं प्रेरणा और साहस उलझनों से उलझ कर निकलने का
भविष्य में उन भूलों को न करने का
जिन्होंने हमें न भूलने वाले ग़म दिये
ज़िन्दगी में सुख और दुख दोनों आते-जाते रहते हैं
सुख में हँसी और ख़ुशी देते हैं
लेकिन दुख में सहनशक्ति, सहिष्णुता और सहानुभूति सिखाते हैं
दूसरों का दर्द समझने की बुद्धि देते हैं
इसलिये ज़िन्दगी के उपन्यास में
जुड़ने वाले और न जुड़ने वाले
सभी पन्नों की ज़रूरत होती है
तभी ज़िन्दगी का उपन्यास पूरा होता है
क्योंकि हर पन्ने में एक कहानी छपी होती है

ooo

इसको ही कहते हैं बचपन

आँखों में निश्छल भोलापन
भोला चेहरा मीठी चितवन
पारदर्शी मन कोमल निर्मल
नहीं हृदय में कोई छल-बल
कभी है आँखों में नटखटपन
और बातों में कभी मसख़रापन
कभी रूठे कभी मन जाये
कभ हँसता है कभी रोकर दिखाये
कभी गोदी में आकर छिप जाये
कभी डर कर आँखें झपकाये
कभी शैतानी करके छुपता
कभी नादानी करके हँसता
सबको ही वह प्यारा लगता
सब सबके अन्तर में बसता
खाना जब भी खिलाये मम्मी
सबसे पहले मीठी चुम्मी
प्यार खींच लेता वह सबसे
अलग ने होये कभी वह हमसे
खाना जब भी खिलाती नानी
सुनता रोज़ इक नई कहानी
उसकी बातों का क्या कहना
वह सबके जीवन का गहना
भोला चेहरा मीठी चितवन
पारदर्शी मन कोमल निर्मल
आँखों में निश्चल भोलापन
इसको ही कहते हैं बचपन

○○○

दिल से दिल को खोलिये

रोज़ दूसरों से मिलते हैं आप
कुछ को समझाते भी हैं सलाह भी देते हैं
लेकिन क्या कभी ख़ुद को भी सुनते हैं आप
क्या कभी ख़ुद से भी कुछ कहते हैं आप

या सिर्फ़ काम दुनिया और दुनियादारी में ही व्यस्त रहते हैं आप
या अपने आप से मिलने से डरते हैं आप
व्यस्तता के बहाने ख़ुद को भुलाना चाहते हैं आप
या ख़ुद को धोखा देने का बहाना चाहते हैं आप

तो कुछ हमारी भी सुनते जाइये जनाब
कभी ख़ुद को भी ख़ुद से मिलवाइये जनाब
थोड़ी देर के लिये कहीं एकान्त में ख़ुद से मिलिये जनाब
चुपचाप बैठकर ख़ुद से कुछ बातें कीजिये जनाब
अपने दिल से मिलिये दिल से दिल की खोलिये जनाब
कुछ अपनी कहिये कुछ उसकी सुनिये जनाब

क्योंकि एक अच्छी ज़िन्दगी के लिये
ख़ुद से मिलना भी ज़रूरी है जनाब
कहते हैं कि आत्मा ही परमात्मा का रूप होती है जनाब
तो ख़ुदा से मिलने के लिये ख़ुद से मिलना ज़रूरी है जनाब

ख़ुद से मिलकर ख़ुदा से मिल लेंगे आप
दूसरों की तो सुनते हैं कुछ अपनी भी सुनिये आप

ooo

अतीत से इतने न जुड़े रहो

बन्धु बीते कल की ओर इतने न मुड़े रहो
कि आने वाला कल टूट जाये
आने वाले कल की ओर इतना भी न जुड़े रहो
कि तुम्हारे हाथ से तुम्हारे आज का दामन छूट जाये
हम तो बंजारे हैं कुछ समय के लिये यहाँ बसने आये हैं
इस छोटी सी ज़िन्दगी में कुछ समय हँसाने-हँसने आये हैं
फिर क्यों तुम चिपके रहना चाहते हो अतीत से
क्यों उन दिनों में जीना चाहते हो जो बीत चुके
तुम जानते हो बंजारे कभी यहाँ कभी वहाँ रहते हैं
वहीं के हो जाते हैं जहाँ जाकर रहने लगते हैं
उस पुराने ठिकाने को याद करके रोते नहीं रहते हैं
बीते दिन अच्छे या बुरे कोई वापिस नहीं आने वाले
तो फिर क्यों करते हो ख़ुद को अतीत के हवाले
हम भगवान के भेजे बंजारे ख़ुशी से क्यों नहीं जी सकते
हर रोज़ हम जहाँ हैं जैसे हैं उसमें ख़ुशी क्यों नहीं ढूँढ सकते
अगर हम पीछे ही मुड़ते रहे तो आगे कैसे बढ़ पायेंगे
मुड़-मुड़ कर पीछे देखते-देखते मंज़िल तक कैसे पहुँच पायेंगे
मंज़िल न मिली तो आने वाला कल भी छूट जायेगा
सारा हौसला टूट जायेगा हाथ से आज का दामन भी छूट जायेगा
ईश्वर ने हमें शक्ति और बुद्धि दी, हम बहुत कुछ कर सकते हैं
हम बंजर को उर्वर बना सकते हैं, वीराने में बहार ला सकते हैं
चाँद तक उड़ सकते हैं सागरतल तक जा सकते हैं
अपनी ताक़त को व्यर्थ की सोच में व्यय न करो
अतीत को छोड़कर वर्तमान में जुड़े रहो
वर्तमान से जुड़कर भविष्य को सँवारते रहो
मंज़िलें खो जायें अतीत से इतना न जुड़े रहो ○○○

हमारे वो पुराने साथी

वो साथी जो स्कूल कॉलेज गली मोहल्ले में कभी साथ थे
ऐसे बिछड़े कि फिर कभी न मिल पाये
लेकिन बिछड़े साथियों की यादें मन को क्यों बार-बार सतायें
ज़िन्दगी में मिलना बिछड़ना तो लगा ही रहता है
फिर क्यों मन पुराने साथियों को न भुला पाये
शायद भोली उम्र में जो मन में बस जाते हैं
वो ऐसे बसते हैं मन में
कि हमेशा के लिये बस जायें
क्यों अक्सर सपनों में मिलने आ जाते हैं
उन पुराने साथियों के साये
सड़क पर चलते हर इन्सान के चेहरों में ढूँढा उनको
शायद किसी चेहरे में वो चेहरे मिल जायें
कौन बता सकता है इतनी बड़ी दुनिया में
कौन कब कहाँ खो जाये और कोई कब कहाँ मिल जाये
कहावत है नया नौ दिन पुराना सौ दिन
काश हमारे वो पुराने दिन एक बार फिर वापिस आ जायें
यूँ तो चलती ही रहती है ज़िन्दगी अपरी रफ़्तार से
फिर क्यों कभी-कभी इतनी पीछे मुड़कर रुक जाये
वो कौन से रिश्ते थे पिछले जन्मों के
कि हम सब मिलकर साथ खेले, साथ पढ़े, साथ हँसे-रोये
लेकिन मिलकर साथ-साथ रह न पाये
कितना अच्छा होता हम सब पुराने दिन याद करके हँसते
मिलकर खेलना, रूठना-मनाना और एक दूसरे को दी सज़ायें
ज़िन्दगी भी अजब खिलौना है बन्धु
जिसमें हम कभी किसी से खेलते हैं और कभी किसी से
फिर जाने कब कहीं किसी ओर मुड़ जायें या बिछड़ जायें

कुछ न मिला उदास हो कर

कुछ न मिला उदास हो कर
यह जान गये हम
फिर भी बताओ ख़ुद को
कैसे मनायें हम
जो पीछे छोड़ आये कैसे भुलायें हम
जिस दिल को तोड़ लाये न जोड़ पायें हम
जो मुड़े क़दम उधर से न मोड़ पायें हम
ये दिल तो इक खिलौना
टूटा है ठोकरों से
काँटों का वो बिछौना
न छूट पाया हमसे
साँसत में जान है अब कुछ कर न पायें हम
जीना भी अब है मुश्किल मर भी न पायें हम
होती अजीब क़िस्मत यह जान गये हम
होगा वही जो होना यह मान गये हम
कोशिश ये अब करेंगे कुछ और जान पायें
जो हो गया वो छोड़ें आगे क़दम बढ़ायें
वो जीना भी क्या जीना
जीयें निराश हो कर
जीना है ज़िन्दगी को
तो छोड़ें सब वहम
कुछ न मिला उदास हो कर
यह जान गये हम

○○○

बन कर मेघदूत जाओ तुम

बदरा झम-झम-झम बरसो तुम
जो पानी न पास तुम्हारे
मेरे आँसू ले जाओ तुम
बदरा झर-झर-झर बरसो तुम

प्रियतम मेरे भये बिदेसिया
लौटे न बन गये परदेसिया
जल से भरी रहतीं ये अँखिया
ले जाओ ये सारा जल तुम
बदरा झर-झर-झर बरसो तुम

शायद याद उन्हें आ जायें
अपने देश के बादल काले
बन्धु मित्र भी याद आ जायें
याद आयें सारे घरवाले
सबका संदेशा ले जाओ तुम
बदरा झर-झर-झर बरसो तुम

कहना मात-पिता की आँखें
रो-रो कर हैं सूजी रहतीं
एक तुम्हारी घरवाली जो
चुप-चुप रात दिवस है रोती
बन कर मेघदूत जाओ तुम
बदरा गहर-गहर बरसो तुम
बदरा झर-झर-झर बरसो तुम

○○○

हाल-ए-दिल किसको सुनायें

दाग़-ए-दिल किसको दिखायें बताओ हम क्या करें
हाल-ए-दिल किसको सुनायें बताओ हम क्या करें
कितने ग़म दिल में छुपाये हुए हम जीते रहे
जितने ज़ख़्म हमको मिले ख़ुद ही उन्हें सीते गये
ज़िन्दगी कैसे कटेगी दर्द यूँ दिल में भरे
दाग़-ए-दिल किसको दिखायें बताओ हम क्या करें
दर्द-ए-दिल इतना बढ़ा बहने लगा आँखों से
कहीं न भेद खुले जिसको छिपाया लाखों से
सारे दुख कैसे छिपायें बताओ हम क्या करें
दाग़-ए-दिल किसको दिखायें बताओ हम क्या करें
जो गुज़रती है हमपे तुम ही कहो कैसे सहें
नाउम्मीदी के इस आलम में भला कैसे रहें
ऐसे घुट-घुट के बताओ भला हम कब तक मरें
दाग़-ए-दिल किसको दिखायें बताओ हम क्या करें
दिल तो चाहे मेरा आसमाँ में उड़ जाना
नहीं मंज़ूर हमें मंज़िलों से मुड़ जाना
पर जो क़िस्मत की को मंज़ूर न हो हम क्या करें
हाल-ए-दिल किसको सुनायें बताओ हम क्या करें
कोशिशें हम हज़ार करते रहे
कभी हम जीते रहे और कभी मरते रहे
मौत से इस तरह बताओ भला हम कब तक मरें
दाग़-ए-दिल किसको दिखायें बताओ हम क्या करें
हाल-ए-दिल किसको सुनायें बताओ हम क्या करें

○○○

मृगमरीचिका के पीछे

इन्सान की ज़िन्दगी है सुख दुख का संगम
जब तक वक़्त के सितम
ख़ुशी और ग़म हवायें सर्द और नम
सोचता रहता है इन्सान ज़िन्दगी भर
ज़िन्दगी कभी क्या और क्या अब है
यह दुनिया भी कितनी अजब है
इसमें रहना भी ग़ज़ब है
इसे छोड़ना भी ग़ज़ब है
कोई कभी नहीं समझा ज़िन्दगी क्या है
वक़्त के तमाशे सब देखते हैं
वक़्त के पटाखे सब पर फूटते हैं
वक़्त के पल कभी देते हैं कभी लूटते हैं
कोई कभी नहीं समझ पाया वक़्त के नज़ारे क्या हैं
किसी को नहीं पता जीवन नैया के कूल किनारे कहाँ हैं
सुख-दुख ज़िन्दगी भर साथ-साथ चलते हैं
ख़ुशियाँ और ग़म भी आसपास रहते हैं
बस सुख और ख़ुशियों के दिन थोड़े छोटे होते हैं
दुख और ग़म के दिन बहुत लम्बे होते हैं या लगते हैं
सर्द, नर्म, गर्म हवायें ज़िन्दगी भर सताती हैं
हम सब सदा तुम्हारे साथ-साथ हैं बताती हैं
बहारें भी कभी-कभी आती हैं
आकर जल्दी से चली भी जाती हैं
मृगमरीचिका के पीछे भागता इन्सान
ज़िन्दगी भर इन शब्दों की परिभाषायें ढूँढता है
और जानना चाहता है इनमें छुपे तत्व, रहस्य
आख़िर यह ज़िन्दगी क्या है?

ooo

छुपा वो तेरे मन की गुफा में

ढूँढ रहा तू जिसको मानव, पूछ रहा तू जिसका रस्ता
उसको ढूँढ कहाँ तू पाये, वह तो तेरे मन में बसता
चढ़ आया तू पर्वत पर्वत, ढूँढ फिरा तू जंगल-जंगल
देख आया अँधियारी गुफायें, माँगीं ऋषि मुनियों से दुआयें
घूम आया सागर तल जाकर, ली डुबकी नदियों में जाकर
वह तो सबमें है लहराता, तू ही उसको समझ न पाता
लगा लिये दुनिया के चक्कर, आया ख़ाली हाथ लौटकर
उसकी ज्योति चमके कण-कण में, मिलता है वो हर जन-जन में
रहता है वो हर प्राणी में, उसी का स्वर सबकी वाणी में
फूलों की सुन्दरता में भी, क्यों तू उसको लख न पाता
अँकुराई नन्ही पत्ती में, क्यों तू उसको देख न पाता
उम्र गँवा दे चाहे सारी, तू न उसको ढूँढ पायेगा
यूँ ही घूम-घूम कर विरथा, जीवन सारा लुट जायेगा
सोचेगा कब आयेगी बारी, अब तो जाने की तैयारी
जीवन भर सोचता रहेगा, क्या कुछ खोया क्या कुछ पाया
जिसको सोच रहा हूँ पाया, क्या मैंने वह सचमुच पाया
इसी चक्र में फँसा रहेगा, चक्रव्यूह तुझको डस लेगा
पढ़ ले ज़रा तू बुद्ध की गाथा और झुका ले अपना माथा
जिसको ढूँढ रहा तू बन्दे वह तो बैठा तेरे कन्धे
जिसे ढूँढता पर्वत-पर्वत, जिसे ढूँढता तू कन्दर में
हर पल जगमग करता रहता, बैठा तेरे ही अन्तर में
अब तू इतनी बात समझ ले, बाहर नहीं मिलेगा दाता
जिसे ढूँढता फिरे गुफा में वह तो हँस-हँस तुझे रिझाता
झाँक ले तू अपने अन्तर में ज्योति जगा ले तू अन्तर में
वह तो सदा साथ है तेरे तू क्यों करता तेरे मेरे
वह तो तेरे अन्दर बसता पूछ रहा तू जिसका रस्ता

ooo

ख़ुद से ही नाता तोड़ लिया

जब दिल ने कहा दिल की मानी
जब दिल ने कहा दिल जोड़ लिया
जब दिल ने कहा रुख़ कर न उधर
जब दिल ने कहा मुँह मोड़ लिया

कितनी ही बातें होती हैं जो करना चाहें कर न सकें
कहता तो बहुत कुछ दिल चाहे जो कहना चाहें कह न सकें
हाँ भोलापन में कभी हमने जो दिल ने कहा वो बोल दिया
दिल में जितना अमृत था घुला अपनी वाणी में घोल दिया
माने न किसी की दिल ये कभी हाँ होती कभी मजबूरी है
बातें सबकी सुननी पड़तीं सुनना भी बहुत ज़रूरी है
यूँ सबको ख़ुश करने की ख़ातिर कभी ज़हर भी हमने घोल लिया
हमने अपने जीवन को ख़ुद ही यह तोहफ़ा इक अनमोल दिया
दिल जाने न पहचाने न दुनिया तो बहुत कुछ कहती है
इस दुनिया की ख़ातिर देखो ये ज़िन्दगी क्या-क्या सहती है
दुनिया से बचा न सके ख़ुद को जीने का बड़ा इक मोल दिया
ये कितने सितम हमने हैं सहे जो जिसने चाहा बोल दिया
समझाया बहुत दिल को हमने फटकारा बहुत पर क्या करते
इसने कुछ ऐसा ठान लिया पल-पल जीते, पल-पल मरते
ये दिल तो बहुत कुछ माँगता है ख़ुद को सूली पे टाँगता है
जब ख़ुद के अन्दर झाँकता है तब अपनी क़ीमत आँकता है
आख़िर ख़ुद दिल को समझाया और ख़ुद से ही नाता तोड़ लिया
अब तो हम पूरा टूट चुके ख़ुद को ही ख़ुद से मोड़ लिया

दिल के टुकड़े तो हज़ार हुए
पर हर टुकड़ा कुछ कहता है
पहले तो ख़ून इक दिल में था
हर टुकड़े से अब ख़ूँ बहता है

○○○

अधूरा मानव

मानव हो कर भी जिसमें मानवता न हो
कैसे मानें उसको मानव
किन्तु ईश के इस मानव को
कैसे कह सकते हैं दानव

शायद इसीलिये हम उसको
कह सकते हैं अधूरा मानव
जो न समझे दुख दर्द किसी का
बन न सके हमदर्द किसी का

शामिल न हो किसी के ग़म में
न हो दुखी किसी के ग़म में
सहानुभूति का नाम न जाने
बस वह अपना दर्द ही जाने

सुख की परिभाषा न जाने
खुशी की भाषा भी न जाने
किसी के सुख में सुख न माने
खुशी मनाना वह न जाने

अपनों को अपना न समझे
औरों से नाता न रखे
ऐसा अधूरा क़िस्सा कैसे
बना समाज का हिस्सा कैसे

अपने स्वार्थ में ऐसा डूबे
सारी दुनिया से मन ऊबे
कैसे कहें वह मानव पूरा
है तो आदमी पर है अधूरा

न वह दानव व वह मानव
वह तो एक अधूरा मानव

○○○

जीवन की डगर

बन्धु मेरे !
जीवन की डगर बड़ी ऊँची-नीची होती है
कभी सफलता कभी असफलता मिलती रहती है
सब दिन हमेशा एक से भी नहीं रहते
धन दौलत के ख़ज़ाने भी सदा एक से नहीं रहते
ज़िन्दगी के उतार चढ़ाव से घबराना मत
असफलताओं से कभी डर जाना मत
सुख के दुख और दुख के बाद सुख भी आता है
यह क्रम तो जीवन भर चलता रहता है
लेकिन दुख या असफलता से घबरा कर
अपने को कम समझ कर हीनभावना से शरमा कर
कभी किसी ग़लत राह की तरफ़ न मुड़ जाना
अच्छाईयाँ छोड़कर बुराईयों से न जुड़ जाना
जो मार्ग पतन की ओर जाता हो उसकी ओर न मुड़ जाना
लक्ष्य प्राप्त करने के लिये सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना पड़ता है
ढलान से जाने वाला छोटा रास्ता गहरे खड्ड में भी गिरा सकता है
बन्धु जीवन की कठिन राहों को हिम्मत से हँस-हँस कर पार करो
मंज़िल स्वयं तुम्हारे पास आयेगी उस क्षण का इन्तज़ार करो
ग़लत राहों से पाई गई मंज़िल स्थाई नहीं होती
ग़लत हाथों से किया गया काम भी टिकाऊ नहीं होता
तुम्हें अपनी राहें ख़ुद चुननी हैं
तुम्हें अपनी ज़िन्दगी की चादर स्वयं बुननी है
सारे कार्य करने के बाद उसे उतार कर
कबीर की तरह ज्यों की त्यों रख देना है
ऊँची-नीची राहों को अपने बल पर पार करना है
चाहे जीवन की डगर बड़ी ऊँची-नीची होती है

ooo

काँटा सन्देह का

काँटा सन्देह का
बड़ा कँटीला होता है
केवल कँटीला ही नहीं
ज़हरीला भी होता है
यह बाँट देता है दिलों को
काट देता है रिश्तों को
सुखा देता है प्रेम के सोते
रह जाते हैं हम रोते धोते
न विश्वास कर पाते हैं
न अविश्वास ही कर पाते हैं
त्रिशंकु से लहराते, लटकते रहते हैं
सन्देह के सागर में भटकते रहते हैं
न आशा होती है न निराशा
समझ नहीं पाते उस रिश्ते की परिभाषा
सन्देह में डूबते उतराते
फँसते जाते हैं दलदल में
जिसमें फँसकर निकलना बहुत कठिन होता है
ढूँढते हैं सहारा छूटते सम्बल में
आशा रखते हैं अवलम्बन में
सन्देह का नशा ग़म भुलाता नहीं है
सन्देह का नशा ग़म बढ़ाता है
नशा सन्देह का
बड़ा नशीला होता है
काँटा सन्देह का बड़ा
कँटीला होता है

○○○

हम भगवान बुद्ध की बात समझ लें

कहते हैं एक उँगली दूसरों की ओर उठाओ
तो चार अँगुलियाँ अपनी ओर भी उठती हैं
किसी पर जब क्रोध आता है
तो क्रोधाग्नि में पहले हम जलते हैं
किसी को काँटा चुभाने से पहले
हम तनाव में रहकर खुद को काँटे चुभाते हैं
जैसे काँटे चुभाने की क्या योजना होगी
वह योजना कैसे कार्यान्वित करी जायेगी
उसके बाद परिणाम क्या हो सकता है
काँटा चुभने वाला क्या-क्या कर सकता है
मेरी इस क्रिया की प्रतिक्रिया क्या और कैसे होगी
उफ़ यह घबराहट कब पीछा छोड़ेगी
तो फिर हम क्यों न भगवान बुद्ध की बात समझ लें
अगर कोई कुछ और न लें, उसका दिया न रखें अपने पास
तो वह चीज़ किसके पास रहेगी निश्चय ही देने वाले के पास
उसी भाँति अगर कोई अपने हृदय और मस्तिष्क से निकाल कर
किसी को गालियाँ देता है, और हम स्वयं पर नियन्त्रण रखकर
उन्हें ग्रहण न करें तो वे रहेंगी देने वाले के पास
जिसके दिल दिमाग़ में जो था वह रह गया उसके ही पास
आप शान्त रहें वह भी कुछ समय आत्ममंथन करके शान्त हो जायेगा
इस प्रकार एक युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही समाप्त हो जायेगा
उदाहरण बहुत से हैं जैसे- कबीर के एक दोहे का अर्थ
जो तुम्हारे लिये काँटा बोये तुम उसेके लिये बो दो फूल
तुम्हारे लिये फूल ही रहेंगे, बोने वाले के लिये बन जायेंगे शूल
तो क्यों न हम संतों की शिक्षा से अपना जीवन बनायें सुखमय
और अपना जीवन बितायें मधुमय, निर्झर

तो दस दरवाज़े खुल जाते हैं

कहते हैं कि जब एक दरवाज़ा बन्द हो जाता है
तो दस दरवाज़े खुल जाते हैं
लेकिन जीवन की यह विडम्बना भी सच है
कि रास्ते तो कई खुल जाते हैं
पर हम खुद ही स्वयं को बन्द कर लेते हैं
बिना खिड़की, दरवाज़े वाले, बिना उजाले वाले खोल में नज़रबन्द
या वहाँ जहाँ होता है चारों ओर अथाह समुन्दर
या उस घर में जिसमें खिड़की, रोशनदान, दरवाज़े, फ़र्श नहीं होते
जीवन एक अथाह सागर है, असीम अम्बर है
जिसमें न कोई छत है, न आँगन है
चारों तरफ़ गहन अन्धकार है
लेकिन बनाने वाले ने हमें इतनी शक्ति दे कर भेजा है
कि हम उस अदृश्य शक्ति पर विश्वास करके
उस पर भक्ति और आस्था रख करके
अपने लिये राहें खोज सकते हैं
हाथ पर हाथ रखकर, नैराश्य के गर्त में फँसकर
हम कभी अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते हैं
जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है
किन्तु संघर्ष पर विजय प्राप्त करके ही
हम जीवन में आगे बढ़ सकते हैं
सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ सकते हैं
निश्चय ही जब एक दरवाज़ा बन्द हो जाता है
तो दस दरवाज़े और खुल जाते हैं
जब एक रास्ता बन्द हो जाता है
तब दस रास्ते और निकल आते हैं

○○○

अस्तित्व ख़तरे में क्यों

ज़माना कितनी तेज़ी से बदल रहा है करवटें
जिधर देखो उधर है बस सलवटें ही सलवटें
इन्सान की बुद्धि और आत्मा दोनों ही
इन सलवटों में लिपट कर मर रही हैं
मानवता ख़ून के आँसू रो रही है
रिश्ते नाते छूट रहे हैं
अपनों से अपनेपन के धागे टूट रहे हैं
अपने ही अपनों को लूट रहे हैं
अशक्त माता-पिता बोझ बन रहे हैं
उन्हें वृद्धाश्रम भेजकर बच्चे बोझमुक्त हो रहे हैं
जैसे संयुक्त परिवार टूट रहा है
वैसे ही देश भी टूट रहा है
जातिवाद, धर्मान्धता, ऊँच-नीच, अमीर-ग़रीब
भाषावाद, राज्यवाद सब उठा रहे हैं, अपनी-अपनी सलीब
आम लोग रो रहे हैं अपने-अपने नसीब पर
आज़ादी के बाद से क्यों सबको
अपना अस्तित्व ख़तरे में लग रहा है
यह कौन-सा आस्तीन का साँप
हमारे देश की एकता और धर्मनिरपेक्षता को डस रहा है
कुर्सी के चक्कर में नेताओं और विभिन्न दलों की आपसी लड़ाइयाँ
एक दूसरे की अनर्गल शब्दों में बुराइयाँ
जनता के पैसे की लूट, चुनाव के समय के वादों का झूठ
काश एक बार आ जाये प्रेम, एकता से परिपूर्ण
आचार्य चाणक्य, अशोक और विक्रमादित्य महान का पुराना ज़माना
एक बार फिर भारत के दिन पलटें

ooo

निकल आया कोई

आज यूँ ही बैठे-बैठे, हमको याद आया कोई
और यादों के ख़ज़ाने से निकल आया कोई

कैसे कोई दूर से आवाज़ देता है मुझे
मैं अचानक गिरने लगती, थाम लेता वह मुझे
भूली भटकी गलियों से बाहर निकल आया कोई
आज यूँ ही बैठे-बैठे, हमको याद आया कोई

गुज़रे हैं बरसों-बरस यादें तो ताज़ी हैं अभी
यादों की उस ताज़गी में खिंच के आ जाओ कभी
दिल की उन गहराइयों से, अब निकल आया कोई
आज यूँ ही बैठे-बैठे, हमको याद आया कोई

जागते में याद करते, सपनों में बातें करें
दुनिया की बातें करें या अपनों की बातें करें
अतीत की बातें सुनाने को निकल आया कोई
आज यूँ ही बैठे-बैठे, हमको याद आया कोई

लम्हा-लम्हा याद जिसको, ज़िन्दगी करती रही
यूँ तो हम चलते रहे और ज़िन्दगी चलती रही
ज़िन्दगी के गगन से है, अब निकल आया कोई
आज यूँ ही बैठे-बैठे, हमको याद आया कोई

○○○

जीवन के कुछ पन्ने खोलें

आओ अपने जीवन के कुछ पन्ने खोलें
ख़ुद से हम कुछ सुनें और कुछ ख़ुद से बोलें
कैसे बीता बचपन कैसे पहुँचे पचहत्तर तक
आधी सदी से पच्चीस ऊपर मन में होती धकधक
कुछ अच्छी ही बातों को हम याद करें तो अच्छा होगा
न अतीत के अँधियारे दिन हम याद करें तो अच्छा होगा
बचपन में जब बैठ के छत पर बादल से करते थे बातें
और बादल से घोड़े हाथी पर्वत जैसी तरह-तरह की शक्लें बनाते
हर बादल को हृदय पटल पर चित्रित कर हम चित्र बनाते
जब बादल उड़ जाते थे जब ज़ोर-ज़ोर से हँसते जाते
भाई-बहन सब सखी सहेली अपने मन के चित्र बनाते
लगता था बादल भी हमारी कल्पनाओं पर थे मुस्कुराते
फिर आती थी रात लिये तारों की बारात गगन में
ढूँढते थे सप्तऋषि, आकाशगंगा, ध्रुवतारे को नील गगन में
चंदा तारों की छाया में बैठ हज़ारों क़िस्से कहते
चुटकुले, अन्ताक्षरी, कहानी, गानों में हम सब मगन थे रहते
दादा-दादी, मम्मी-पापा परी कथायें, लोककथायें, देशकथायें हमें सुनाते
राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, आज़ाद, भगत सिंह के विषय में थे बताते
जब जाते थे गाँव वहाँ नाना-नानी, मामा-मामी का प्यार था मिलता
मटर, चने का साथे खेत में, उपवन में फलों को स्वाद था मिलता
दिन स्कूल के याद आते जब पढ़ते, खेलते, खाते और गाते थे
अध्यापक जी हमें दर्शनीय, ऐतिहासिक स्थल देखने ले जाते थे
कॉलेज के दिन भी भूल न पाते फिर जाने कब बड़े हो गये हम
छतें, खेत, संगी साथी कब, कहाँ छोड़ आये हम
अच्छी यादों के संग ख़ुश रहने की करें कोशिशें
जीवन में अमृत रस घोलें, जीवन के कुछ पन्ने खोलें

○○○

बीती बात

आँख की झपक में
हार गये जज़्बात
वक़्त ने करवट ली
जीत गये हालात
बदल गई ज़िन्दगी एक ही पल में
भूल गये सारे रिश्ते अहसासात
कहते सब होता है क़िस्मत के कहने से
कैसे सब कुछ हो जाता बात बेबात
कुछ कहना या पूछना दूर की बात है
हो जाते सोच पर भी पहरेदार तैनात
पड़ जाते हैं होठों पर बड़े पक्के ताले
बात नहीं होती चाहे हो जाये मुलाक़ात
दुनिया की नज़रें हैं बहुत तीखी
ज़रा-ज़रा-सी बात की होती तहक़ीक़ात
अच्छा यही है भूल जायें सब कुछ
जो हुआ वो सब था एक बीती बात

ooo

सूरज, बादल और पवन

सूरज जी और बादल मिलकर खेलें आँख मिचौली
दोनों मिलकर लगा रहे हैं आसमान पर बोली
जिसकी बोली बड़ी लगेगी वह खुल कर निकलेगा
उसी का जलवा आसमान से चमकेगा बरसेगा
पल में सूरज जी आगे हैं पल में बादल काले
पल में सूरज डूब गया तो पल में बादल भागे

अजब तमाशा मचल रहा है उन दोनों के बीच
धोबी के कपड़े सूखें या हो किसान की जीत
पवनदेव भी करें ठिठोली दोनों को भटकाते
कभी उड़ते बादल को, कभी सूरज के आगे ला अटकाते
फूँक लगाते धूप निकलती, फूँक लगाते छाया
नचा रहे बादल को देखो पवनदेव की माया

सूरज, बादल और पवन ने खेली नभ में होली
श्वेत, सुनहरे, काले रंगों की माया नभ में घोली
तीनों मिलकर साथ-साथ करते हैं हँसी ठिठोली
धूप छाँव के खेल में सबने खेली आँख मिचौली

○○○

सपने बुन लिये

सीपियों की तरह सपने चुन लिये
मैंने लाखों में से कुछ अपने लिये भी बुन लिये
जब समन्दर के किनारे बीनती हूँ सीपियाँ
लगे मेरे दर्द सारे अपने अन्दर भरके सारे
जा के सागर के अतल में छुपी रहतीं सीपियाँ
लगता जैसे सीपियों में हैं छुपे सपने मेरे
शायद निकलें इनमें कुछ हमदर्द, कुछ अपने मेरे
ऐसे ही मैं ज़िन्दगी भर ढूँढती सपने रही
स्वार्थी दुनिया में मैं कुछ ढूँढती अपने रही

पर मेरी झोली में शायद छेद कुछ ज़्यादा ही थे
जो लगे हमदर्द उसमें वो समा ही न सके
कभी ख़ुद में झाँककर कुछ प्रश्न ख़ुद से भी करे
ग़ल्तियाँ मेरी बता मन टूटता मन क्या करे
जब मिला उत्तर न कोई चल पड़ी इक धुन लिये
लहर से सागर की मैंने थोड़े सपने चुन लिये
ज़िन्दगी की लहर में बहना शुरू अब हो गया
मैंने अपने लिये सपनों का ख़ज़ाना चुन लिया
अब तो सपनों के ख़ज़ाने में ही अपने जियें
सीपियों की तरह सपने चुन लिये
मैंने लाखों में से कुछ अपने लिये भी बुन लिये

ooo

मेरे घर के हर कोने में

मेरे घर के हर कोने में
माँ पापा का प्यार छुपा है
घर की ईंट-ईंट में उनकी ही
मेहनत का चित्र छपा है
ख़ूब भ्रमण करने मैं जाता
नदी, समुन्दर, पर्वत, घाटी
अच्छी लगती सबकी माटी
मुझे घूमना ख़ूब है भाता
बाग़-बगीचे जंगल-जंगल
सबसे हूँ मैं मिलकर आता
ख़ूब भागता तितली के संग
भँवरों के संग गाने गाता
सुबह का सूर्योदय भी देखता
शाम का सूर्यास्त भी भाता
लेकिन रात पास आते ही
मेरा घर मुझको है बुलाता
और कहीं मैं रुक न पाऊँ
बस मुझको अपने घर जाना
जाऊँ घर के हर कमरे में
खाऊँ माँ के हाथ का खाना
पापा देते जो ज्ञान ख़ज़ाना
मन में छुपा मैंने रखा है
मेरे घर के हर कोने में
माँ-पापा का प्यार छुपा है

○○○

खिलंदड़े बादल

सँवलाये बादलों ने सूरज को
नेह से आलिंगन में बाँध लिया
मौसम सुहाना हुआ
नेह कुछ अधिक बढ़ा
बादलों का घेरा बढ़ा
मौसम मस्ताना हुआ
खिलंदड़े बादल खुल अम्बर में
टकरा-टकरा आपस में
ढोल बजाने लगे
बादल दीवाने हुए
झाँक-झाँक बादलों से
बिजली भी चमकने लगी
ज़ोर-ज़ोर करे शोर
धरती पर नाचे मोर
प्यासी धरती ने भी
जगाई आवाज़ बादल को
दरक रही मेरी छाती
भर तो मेरे आँचल को
टप-टपा-टप-टपकने लगा आई दया बादल को
धरती का तन महकने लगा
झूमें जन-गण ता-ता थई-थई
गायें किसान हैया-हो-हुई-हुई
बादल के स्वागत में ख़ूब नाच गाना हुआ
मौसम सुहाना हुआ
खिलंदड़े बादलों का अम्बर में आगमन हुआ

○○○

दिल डूब सा रहा

कितनी उदास शाम है दिल डूब सा रहा
ख़ुद से तो क्या ख़ुदा से भी दिल ऊब सा रहा

कैसा अजीब सा समाँ कैसी अजीब शाम
सूरज को जाते देखा तो लगा मैं भी जा रहा

ऐसे ही बादल जायेगी यह शाम रात में
याद आयेंगे अँधेरे जिन्हें उम्र भर सहा

आँखों को अब आदत पड़ गई रातों के काम की
पानी समन्दरों का पूरी रात जो बहा

हम सोचते किसी से, न शिकवा है न गिला
आँखों ने कह दिया जिसे, न जीभ ने कहा

थोड़ी सी बात समझ में अब आ रही ऐ दोस्त
मेरे लिए बना नहीं, न ये दुनिया न ये जहां

काश ऐसी कोई दुनिया होती मेरे प्रभु
मिल जाता भटकते दिल को थोड़ा सुकूँ जहाँ

ooo

मिल जाये उजाला मुझको

मेरे सपनों ने सदा रोज़ पुकारा जिसको
काश मिल जाये वो जीने का सहारा मुझको
बीच मँझधार खड़ा मैं हूँ निराशा में पड़ा
काश मिल जाये निराशा का किनारा मुझको
कैसा सुनसान समाँ कैसी हैं वीरानियाँ ये
काश अब छोड़ दे छाया जो अँधेरा मुझको
ज़िन्दगी हमको दिखाती है नज़ारे कितने
काश इनमें ही मिल जाये कहीं कोई उजाला मुझको
कितना भटका हूँ मैं ज़िन्दगी की राहों में
काश मिल जाये मेरी मंज़िल का ठिकाना मुझको
जीना मुश्किल है बड़ा होने लगा
काश मिल जाये कहीं जीने का कोई बहाना मुझको
ख़त्म हो जायें रातें अँधियारी
काश मुस्कुराता हुआ मिल जाये सवेरा मुझको
चार दीवारें और एक छत ही है काफ़ी
काश मिल जाये सुकूँ का वो बसेरा मुझको
कहते हैं ज़िन्दगी में वक़्त सभी कुछ करता
काश मिल जाये कभी वक़्त सुनहरा मुझको
रोज़ देखूँ मैं डूबता उगता सूरज
काश जीवन में मिले ऐसा नज़ारा मुझको

○○○

हम रहेंगे या न रहेंगे

बहुत दिन बीत गये आपको गये
हम तो हम नहीं रह गये
हम किसी से कुछ कह नहीं पाते
सारे आँसू अन्दर ही हैं बहाते
फिर भी लोग जब हमसे आपके न आने की वजह पूछेंगे
एक बार आके बता जाओ कि हम उनसे क्या कहेंगे
सिर्फ़ इतना ही बता दो हमको
देश छोड़ विदेश में जो तुमको भाया
क्या तुम्हें अपना घर, अपना शहर, अपना देश याद नहीं आया
क्या यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं जो तुम्हें हो बुलाता
क्या परिवार के लोगों को भूल गये
क्या हम भी कभी याद नहीं आये
आप चले गये हम तो हम नहीं रह गये
दर्द तो यूँ भी नहीं कम ज़िन्दगी में
इस बरस कुछ ख़ास हैं कैसे सहेंगे
ढेरों दर्द और आँसू छुपा रखे हैं हमने
सिर्फ़ तुम्हारे सामने ही जो बहेंगे
आख़िरी तमन्ना बस एक ही है
आज ही आ जाओ
क्या पता कल
हम रहेंगे या न रहेंगे

ooo

इन्सान क्या है

इन्सान क्या है?
प्रश्न तो बड़ा आसान है
इन्सान तो इन्सान है और क्या?
कुछ कहेंगे इन्सान विधाता की अनोखी कृति है
कुछ कहेंगे इन्सान कुदरत का एक खिलौना है
कुछ कहेंगे इन्सान भाग्य के हाथ का खिलौना है
जैसे भाग्य नचाता है, नाचता रहता है
कभी हारता है कभी जीतता है
लेकिन शायद -
इन्सान किसी और के हाथों का नहीं
बल्कि अपने हाथों का खिलौना है
अपने ही हाथों से कभी सुन्दर खिलौना बन जाता है
कभी अपने ही हाथों ग़लत काम करके
ख़ुद को तोड़ लेता है
अपनी ज़िन्दगी का रुख़
कभी इधर कभी उधर मोड़ता रहता है
ज़िन्दगी भर जुड़ने और टूटने का खेल चलता रहता है
इन्सान केवल जीवन के रंगमंच का अभिनेता नहीं होता
अपितु वह अपने जीवन का निर्देशक भी होता है
अपने जीवन के क्षणों को
वह खिलौना बनाकर
जीवन भर खेलता रहता है
खिलौना कभी बुरा बनता है, कभी अच्छा
इन्सान बना रहता है उससे खेलने वाला बच्चा

○○○

अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर

कुछ अनुत्तरित प्रश्न हृदय की पीड़ा बनकर रह जाते हैं
और हम आयुपर्यन्त उनके उत्तर ढूँढते रह जाते हैं
क्यों कभी-कभी रात के अँधेरों में सर्चलाइट बनकर
ये अनुत्तरित प्रश्न चमकने लगते हैं
उनकी तेज़ चमक आँखों को अन्धा बना देती है
उनकी रौशनी दिल के कोनों में प्रवेश करके
पूरे दिल को झकझोरने लगती है
शायद किसी प्रश्न पर रौशनी पड़ जाये
मेरे किसी अनुत्तरित प्रश्न का उत्तर तो मिल जाये
लेकिन उन प्रश्नों के उत्तर देने वाले तो
खो गये दुनिया की भीड़ में
हम छुपे बैठे हैं अपने नीड़ में
कौन आयेगा उन प्रश्नों के उत्तर देने
कभी बाहर की भीड़ में
हर चेहरे ये ढूँढते हैं
कोई ऐसा जाना पहचाना चेहरा
जिसे देखते ही पकड़ कर पूछ लें
उन अधूरे-अनकहे उत्तरों को जो सताते रह जाते हैं
जिन्हें हम आयुपर्यन्त ढूँढते रह जाते हैं
काश! कोई दैवीय शक्ति आये
और मुझे शान्ति का दान दे जाये
मेरे उन अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर दे जाये
जिनके बिना मेरे नींद और चैन उड़ गये

○○○

जीवन संघर्ष के अभ्यस्त

मिटने न दो विश्वास को
न टूटने दो आस को
कम कभी होने न दो
कुछ सीखने की प्यास को
ज़िन्दगी कुछ करने का नाम है
न भूलो करने बहुत काम हैं
ज़िन्दगी संघर्ष है
इससे न डरना तुम कभी
क्योंकि संघर्ष के बाद ही उत्कर्ष है
संघर्ष का सामना न करना अपकर्ष है
जीवन में पग-पग पर बाधायें हैं
क्या निर्णय लें दुविधायें हैं
करना है बाधाओं को ध्वस्त
सही निर्णय लेकर रहो आश्वस्त
कहते हैं ज़िन्दगी आग का दरिया है
ज़िन्दगी देखने का सबका अपना नज़रिया है
जो आग समझे उसके लिये आग है
जो ख़ुशियाँ ढूँढे उसके लिये सौभाग्य है
सही ज़िन्दगी जीने के लिये
आस-विश्वास, कुछ करने की
कुछ सीखने की प्यास को
कभी न छोड़ना
धीरे-धीरे हो जाओगे
जीवन संघर्ष के अभ्यस्त

○○○

क्यों आ जाते

जब मिलते दो वक़्त शाम को
क्यों यादों में आ जाते हो मुझे सताने
तन्हाई में दिल-दिमाग़ में
आते रहते किसी बहाने
क्यों मेरे कानों में आकर, गुन-गुन गाते गीत पुराने
क्यों धुँधलाई यादों में तुम, आ जाते हो दिया जलाने
धूल भरी उन परतों की तुम, क्यों आ जाते धूल उड़ाने
सोई हुई उम्मीदों को तुम, क्यों आ जाते फिर से जगाने
क्यों बीती बातों की कथायें
आ जाते हो मुझे सुनाने
नहीं लौटकर आयेंगे अब
गये वक़्त के दिन वो सुहाने
फिर किस आशा में तुम आते
कुछ अफ़साने नये बनाने
नहीं मिलेगा अब कुछ वापिस
छीन लिया जो हमसे जहां ने
अब आना तो सिर्फ़ यूँ आना
मेरी उम्मीदों को भुलाने
या फिर तूफ़ाँ बनकर आना
यादों के तुम दिये बुझाने
आ जाना बनकर बिजली तुम
दिल के उन तारों पे गिराने
भूले बिसरे साथी अब न आना
तुम जलते को जलाने

○○○

ऐसा क्या गुनाह किया

ज़िन्दगी तुझसे बहुत तो नहीं चाहा मैंने
थोड़ा सा प्यार ज़रा-सा सुकून था चाहा मैंने

क्या ख़ज़ाने में तेरे इतना भी कुछ शेष नहीं
या तेरी हद से अधिक था चाहा मैंने

तेरे दामन में क्या काँटे ही बचे मेरे लिये
एक ही फूल तो तुझसे था चाहा मैंने

देना तो दूर तूने फूल कभी न दिखाये मुझको
ऐसा भी क्या गुनाह किया था मैंने

जीना तो इक गुनाह ही है लेकिन
ज़िन्दगी तुझसे ये कैसा हुनर सीख लिया मैंने

मैं शिकायत करूँ तुझसे मेरी फ़ितरत ही नहीं
पर तूने दिया कभी वो नहीं जो चाहा मैंने

ये तो सब नसीबों का खेल ही कहिये
जिसका पल भर का भरोसा नहीं उसे चाहा मैंने

ज़िन्दगी सितारों के खेलती है खेल
पर सितारों का क्या था बिगाड़ा मैंने

हाथों की लकीरों में भी न जाने क्या लिखा
ज़रा पढ़कर तो बता ऐसा क्या गुनाह किया मैंने

○○○

प्रीत की यह रीत है

चाँदनी झरती रही और आँखें भी झरती रहीं
दोनों अपने-अपने ढंग से मन ही मन मरती रहीं
चाँद के आँसू जो टपके लोग समझे चाँदनी
झरती आँखों से ही तब थी मुस्कुराई चाँदनी
दर्द से कूकी थी कोयल लोग समझे गीत है
दर्द से ही गीत निकले प्रीत की यह रीत है
यूँ छिपाया अपने ग़म को दुनिया की नज़रों से दोस्त
दुख भरी मुस्कान उसकी सब हँसी समझा किये

ज़िन्दगी भी क्या तमाशा करती रहती है सदा
दिल छिपाये रखता ग़म को आँख भरती है सज़ा
बादलों के दुख को भी, कोई न समझा आज तक
ढूँढते फिरते हैं किसको, देश-विदेश वो अब तलक
बरस बीते हैं हज़ारों, अपने दिल की क्या कहा करें
विरही बादल रोते फिरते, धारों-धार बहा करें
हर बरस घूमें पुकारें मेरा प्यार कहाँ रहे

बिजली चमका कर किसको राह दिखायें, कभी बजाकर ढोल ज़ोर से
बरसें धीरे-धीरे कभी रोयें कभी चीख़ कर ज़ोर से
कभी दर्द से फट जायें बादल आने ग़म कैसे सहें
यूँ ही जड़-चेतन, मानव, पशु-पक्षी अपनी प्रीत की रीत निभाते रहे
ऊँचे पर्वत बरसों से दबाये दर्द लावा बनकर उगलते रहे
कभी अग्नि देवता किसको ढूँढते हुए जंगलों को आग में निगलते रहे
अपने बच्चों के भार से दबी धरती माता फटती रही, दरकती रही
समग्र सृष्टि की आँखें कभी सुख में, कभी दुख में झरती रहीं

ooo

हम शूल चुनते रह गये

ज़िन्दगी की उलझनों में भूल हम ख़ुद को गये
फूल चुनने की बजाये शूल चुनते रह गये
काम में न ला सके हम अपनी इच्छाशक्ति को
ग़ल्तियों पर ग़ल्तियाँ हम रोज़ ही करते गये

उलझनें तो आती रहतीं ज़िन्दगी में सबकी ही
उलझनों में ग़ल्तियों से हम उलझते ही गये
जानते थे खोलकर परतें न कुछ मिल पायेगा
फिर भी गुज़रे वक़्त के हर लम्हे पर रोते गये

ज़िन्दगी है जंग यह तो है हमेशा से पता
और बस हम ज़िन्दगी की जंग ही लड़ते गये
बरस पर बीते बरस हम जंग ही लड़ते रहे
लुट गया सब जंग में ये हाथ खाली रह गये

खोया क्या पाया है क्या इसका हिसाब कहाँ रहा
हम नसीबों की भँवर में डूबकर ही रह गये
चैन दिन का रात की नींदें गँवा बैठे हैं हम
ज़हर ही बनता गया जिसको दवा समझा किये
आया कैसा वक़्त बस हम धूल बनकर रह गये

ज़िन्दगी की उलझनों में भूल हम ख़ुद को गये
फूल चुनने की बजाये शूल चुनते रह गये

ooo

हैं हर क़दम पे ठोकरें

है कौन-सी दुनिया मेरी मैं भूल गया हूँ
मैं अपने ही नसीब से क्यों रूठ गया हूँ
हैं हर क़दम पे ठोकरें पग-पग पे अड़चनें
बालों के गुच्छों जैसी उलझती हैं उलझनें

अपने सलीब पर ही मैं झूल गया हूँ
हैं ज़िन्दगी में ग़म ही ग़म सुनता बहुत रहा
जब मुझपे वक़्त आया सहता बहुत रहा
लगता है जीते जी मैं दुनिया से उठ गया हूँ

मैं अपने ही हाथों से घुट-घुट के लुट गया हूँ
ये ज़िन्दगी की दास्ताँ किसको सुनाऊँ मैं
दुख दर्द रंजो-ग़म सब किसको दिखाऊँ मैं
अपनी ही ज़िन्दगी में मैं बन शूल गया हूँ

धुँधला गई हैं नज़रें राहें हैं खो गईं
हाथों की सब लकीरें क़िस्मत है धो गई
अपनी ही नज़रों में मैं बन झूठ गया हूँ
है कौन सी दुनिया मेरी मैं झूल गया हूँ

○○○

धरा से आकाश तक

पंख कैसे लग गये मेरे विचारों को
उड़ रही बिन पंख के मैं
धरा से आकाश तक
भर गये कैसे ये सुर मेरे स्वरों में
गूँजता संगीत मेरा
धरा से आकाश तक
कामनायें पूर्ण हैं सबकी धरा पर
भावनायें अपूर्ण रहें न किसी की धरा पर
यातनायें पाये न कोई इस धरा पर
याचनायें पूर्ण हों सबकी धरा पर
कर रही हूँ प्रार्थनायें
मैं धरा से गगन तक
कर रही करबद्ध वंदन
ग्रहण कर लो मेरा अर्चन
है समर्पित मेरा तन-मन
कर दिया सबकुछ है अर्पण
गूँजता है मेरा क्रन्दन
धरा से आकाश तक
पंख जैसे कट गये हैं
कैसे उड़ पाऊँगी मैं अब
धरा से आकाश तक

ooo

मिटा दे उन यादों को

मेरे वक़्त के क्षण-क्षण पर
पहरा देने वाले
मेरे वक़्त के पहरेदारों
काश तुम उन क्षणों के साथ जुड़ी
मेरी यादों को भी बन्द कर देते
एक ऐसे कारागार में
जहाँ से वो निकल-निकल कर
आ-आ कर न अधिकार जमातीं
मेरे दिल पर मेरे दिमाग़ पर
जब बीते वक़्त के उन लम्हों को
नहीं आने दिया वापिस
तो क्यों आने दिया उन यादों को
बार-बार सताने को
बार-बार रुलाने को
ऐ नसीबों के ख़ुदा
जैसे बीते क्षणों को ख़त्म करके
बन्द कर दिया पन्नों में इतिहास के
वैसे ही मिआ दे इन यादों को
मेरे दिल दिमाग़
मेरे हर अहसास से
लगा दे कड़े पहरे अतीत की उन यादों पर
मिटा दें उन यादों को मेरी यादों से

ooo

हमराह

मेरे बन्धु!
मेरी ज़िन्दगी की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में
सीधी राह तलाशने के लिये
मेरी ज़िन्दगी की भूल-भुलैया में
सही राह खोजने के लिये
मेरी ज़िन्दगी की अँधियारी राहों में
मुझे रौशनी दिखाने के लिये
जाने अनजाने मुझसे हुई ग़ल्तियों को
सुधारने के लिये
ज़िन्दगी के कड़वे तीखे क्षणों में
दो मीठे बोल सुनने के लिये
मुझे एक सहारे की नहीं
एक सच्चे साथी की ज़रूरत है

बन्धु! क्या तुम
ज़िन्दगी की इन अनजान गलियों में
मेरा हाथ थाम कर चल सकोगे
क्या मुझे एक सच्चा साथ दे सकोगे
ज़िन्दगी की सुनसान राहों में
एक हमराह बन सकोगे
ज़िन्दगी की अँधी गलियों से
मुझे निकाल सकोगे

○○○

दिलों में दूरी

क्यों है, कैसी है, ये मजबूरी
साथ रहते हैं दिलों में फिर भी क्यों दूरी
कभी-कभी अनजाने में ही
रिश्तों में टकराहट होने लगती है
आपस की बातों में शक की आहट होने लगती है
छोटी-छोटी बातें बड़ी लगने लगती हैं
जब मिले थे पहली बार बुरी वो घड़ी लगने लगती है
साथ रहना लगने लगता है मुश्किल
लगता है साथ रहना अब है नामुमकिन
कच्ची पड़ने लगती है प्रेम से बाँधी डोरी
कच्ची डोरी टुकड़े होने पर बड़ी कोशिश से जाती है जोड़ी
लाख जोड़ी जाये गाँठ तो पड़ ही जाती है
कई बार टूटते जुड़ते टुकड़ों से
रिश्ता गाँठों की माला सा बन जाता है
ज़रा-ज़रा सी बात में कोई एक तन जाता है
फिर छोटी-बड़ी जंग होती है
दिलों की शान्ति भंग होती है
दोनों को लगता है विश्वास की हो रही है चोरी
काश! शुरू में ही बातों को बढ़ने न देते
काँटों को दिलों में गड़ने न देते
उलझनों के गुच्छे और न उलझाते
समय रहते सच्चे मन से सुलझाते
तो न होती कोई मजबूरी न होती दिलों में दूरी
न रहतीं भावनायें, कामनायें अधूरी
ज़िन्दगी बनती खुशहाल और पूरी

○○○

रोज़ ये रातें

रोज़ ये रातें
मुझसे क्या माँगने आ जाती हैं
मेरी ज़िन्दगी के भूले बिसरे क्षणों में
झाँकने आ जाती हैं
बरसों पुरानी बीती यादों को याद दिलाने आ जाती हैं
अमावस के दिन भी आँखों में
वो गुज़री चाँदनी रातों को ले आती हैं
बचपन के खिलंदड़े दिन रात
ननिहाल ददिहाल के गाँव के खेत-पात
स्कूल कॉलेज के संगी साथी
पढ़ाई घुमाई खेलना खाना
हॉस्टल की छत पर मिलकर गाना
चाँद की चाँदनी के साथ गाये गये गाने
ढूँढ-ढूँढ कर गाते थे गाने नये और पुराने से पुराने
आज जीवन के तीसरे पहर में ले आती है ये रातें
खींच-खींच कर गुज़रे ज़माने जो आते हैं मुझे सताने
रात भर न जाने कहाँ-कहाँ की
सैर कराती हैं सपनों में
मैं भी खुशी से डूब जाती हूँ उन बिछड़े अपनों में
यकायक घबरा कर नींद खुल जाती है
पलक की झपक में सब कुछ ग़ायब हो जाता है
मेरे पास सिर्फ़ मेरा आज रह जाता है
क्यों ये रातें मुझे सूली पर टाँगने रोज़ आ जाती हैं
रोज़ ये रातें मुझसे क्या माँगने आ जाती हैं

ooo

रोज़ एक दिन

रोज़ एक दिन गुज़र जाता है
लेकिन यूँ ही नहीं गुज़रता
रोज़ गढ़ जाता है एक नई कहानी
रोज़ की नई कहानी अगले दिन हो जाती है पुरानी
पर ख़त्म नहीं होतीं ये कहानियाँ
जुड़ती जाती हैं एक के बाद एक
बन जाती हैं अतीत की निशानियाँ
यही है हर इन्सान की ज़िन्दगी की
सबसे बड़ी त्रासदी
मरतीं नहीं मिटतीं नहीं ये कहानियाँ

वक़्त के साथ-साथ गहराई से जमा होती जाती हैं
इन्सान के दिल में दिमाग़ में
जब तब जलने लगती हैं अन्तर की आग में
कभी सपनों में आती हैं
कभी अपनों की याद दिलाती हैं
इन्सान चाहकर भी इनसे पीछा नहीं छुड़ा पाता
लाख चाहे पर इनसे रिश्ता नहीं तुड़ा पाता
अच्छी और बुरी दोनों तरह की कहानियाँ
जब-जब याद आती हैं तड़पाती हैं
बुरी कहती है ऐसा वक़्त क्यों आया
अच्छी कहती है वो वक़्त क्यों चला गया

वक़्त इन्सान पर कितना क़हर ढाता है
रोज़ एक दिन गुज़र जाता है

○○○

मेरा अस्तित्व कहाँ है?

एक दिन अचानक ही अपनी पहचान ढूँढने के लिये निकल पड़ी
कैसी अजीब थी वह घड़ी, जब मैंने ले लिया एक फैसला
चल मन ख़ुद को ढूँढने... चल अकेला
सर्वप्रथम पहुँची पिता के घर
मिला ढेर-सा प्यार और आदर
घर भी अन्दर बाहर वही था, कोई विशेष बदलाव नहीं था
लेकिन जो मैं ढूँढ रही थी वह नहीं मिला
वहाँ मेरा कोई अस्तित्व शेष नहीं था
जो भी मेरा था वह अब भी भाभी और भतीजी का था
मैं तो आँगन की गाय थी, जिधर हाँका चली गई थी
एक भ्रम टूटा क्योंकि उखड़ चुका था मेरा खूँटा
फिर पहुँची पति के घर जहाँ लुटा दिया था तन-मन-धन
ख़ुद को भी भूल गई थी उन सबकी सेवा में
लेकिन मेरा कोई अस्तित्व नहीं था उस घर की मेवा में
हर क्षण अहसास दिलाया जाता था
निकल जाओ घर से यह घर तुम्हारा नहीं है
तीसरा सहारा ढूँढा बेटे के घर
जिसे पाल पोस कर बड़ा किया ख़ून से सींचकर
लेकिन मेरा अस्तित्व वहाँ भी कहाँ था
आज के युग का एकल परिवार ही वहाँ था
सबके अपने अलग-अलग कमरे
पर मेरे नाम का कमरा तो वहाँ था ही नहीं
मुझ अवाँछित को याद आ रहा था जो जीवन भर झेला
मैंने ले लिया एक फैसला
मेरा अस्तित्व मुझे ढूँढना था ख़ुद ही अपने में
भूल का जो जीवन भर झेला
तेरे पास अभी भी बहुत कुछ है... चल अकेला ○○○

हृदय से गीत संगीत निकालें

जब आँखों को कुछ अच्छा दिखे तो हृदय से गीत संगीत निकले
जब आसपास स्नेह की वर्षा हो तो हृदय से संगीत निकले
जब न हो कोई दीन दुखी निर्धन तो हृदय से संगीत निकले
जब न हो ऊँच-नीच, छूत-अछूत का भेदभाव तो संगीत निकले

जब न हो शत्रुता, न हो भीषण युद्ध तभी तो संगीत निकले
जब मिट जायें अन्याय, आतंक, अत्याचार तभी तो संगीत निकले
जब न हो अपहरण, दुर्व्यवहार, बलात्कार तभी तो संगीत निकले
जब न हो घृणा, शोषण का अन्धकार तभी संगीत सरिता निकले
जब छाये खेतों में हरियाली झूम उठे डाली-डाली तो संगीत निकले
जब समाज में हो प्रेमभावना रोज़ रहे होली दिवाली तो संगीत निकले
जब कटें न हरे-भरे जंगल न तोड़े जायें पर्वत संगीत निकले

जब रहना पड़े कंक्रीट के जंगलों में तो कैसे संगीत निकले
जब बने हों घर और पुल रेत के तो कैसे संगीत निकले
जब भोजन और दवाइयों में मिलावट तो आत्मा से कैसे संगीत निकले
जब मानवता ग्रस्त हो स्वार्थ और लालच में कैसे संगीत निकले
जब दानवता ग्रस रही हो समाज को तो कैसे संगीत निकले

नये सूरज को आज नई सुबह की तलाश है तो गीत निकले
करबद्ध प्रभु से प्रार्थना मानवता को समृद्ध करे हृदय में गीत भर दे
जब प्रेम का साम्राज्य छा जाये धरा पर तब हृदय से गीत निकले
जब सुबह का नया सूरज रौशन कर दे धरा पर तब गीत निकले
शान्ति, मैत्री, कला-साहित्य की उन्नति हो तो अमर संगीत निकले

○○○

बहती हुई यादें

ये वक़्त की धारा में बहती हुई यादें
दिल और दिमाग़ की कारा में रहती हुई यादें
ये धुँधले पन्नों को पलटती हुई यादें
ये बीते क्षणों में भटकती हुई यादें

दिल के हर कोने में मचलती हुई यादें
कुछ याद आने पर ये बहलती हुई यादें
तस्वीर बनके काग़ज़ पर चिपकी हुई यादें
एलबम के अन्दर पन्नों में छुपती हुई यादें

ये वक़्त की मार को सहती हुई यादें
चुपचाप बन्द होठों से कुछ कहती हुई यादें
अतीत में मिले दुखों की सिहरती हुई यादें
बिछड़े हुए अपनों की बिलखती हुई यादें

कुछ अच्छे क्षणों में मिली विहँसती हुई यादें
अपनों से मिले प्यार की महकती हुई यादें
ये वक़्त की धारा में बहती हुई यादें
दिल और दिमाग़ की कारा में बहती हुई यादें

○○○

क्यों मशीनी ज़िन्दगी

क्यों स्वयं ही घूँट कड़वे पी रहे हैं
क्यों मशीनी ज़िन्दगी हम जी रहे हैं
न समय है घूमने का न प्रकृति के निकट जायें
न समय है देखें पक्षी उनके स्वर से स्वर मिलायें
कूकती कोयल बुलाती आओ सुन लो कूक मेरी
कह रही बैठी चकोरी आओ सुन लो हूक मेरी
इस तरह के पक्षीगण आँगन में आकर हैं बुलाते
व्यस्त जीवन में मगर हम ख़ुद से भी तो मिल न पाते
बैठकर नदिया के तीरे ध्यान से देखो वो नैया
झूमती लहरों पे जाती गा रहा उसका खिवैया
बाँसुरी की धुन सुनो है कौन वो मुरली बजैया
क्या तुम्हें न याद आये बाँसुरी वाला कन्हैया
देख लो आकाश में बादल हैं कैसे रंग दिखाते
क्या तुम्हें अब न कभी बचपन के वो दिन याद आते
ढूँढते थे बादलों में नदियाँ, पर्वत और हाथी
अपनी-अपनी दृष्टि से बतलाते थे सब संगी साथी
छत पे जाकर तारों और चंदा मामा से करना बातें
याद आतीं नहीं तुम्हें क्या पूरे चाँदों की वो रातें
अस्त होते उदित होते सूरज के रंग भरे बादल
खो गईं हैं कहाँ वो ख़ुशियाँ दिल है लगता जैसे घायल
याद आते हैं जब वो दिन लगे सबसे हम बिछड़ गये
व्यस्त जीवन में तो लगता जैसे ख़ुद से भी बिछड़ गये
लगता जैसे ज़ख़्म बैठे अपने ख़ुद हम सी रहे हैं
क्यों मशीनी ज़िन्दगी हम जी रहे हैं

○○○

बेईमानी की नींव पर

रेत के बने महल क्या कभी टिक पाये हैं
झूठ की नींव पर बने रिश्ते क्या कभी जुड़ पाये हैं
झूठ रिश्वत और बेईमानी की नींव पर
कैसे बन पायेंगी पक्की कंक्रीट की इमारतें
कैसे ईंट से ईंट का रिश्ता होगा मज़बूत
जब उन्हें मिलेंगी कच्ची सौग़ातें
जब भगवान का बनाया सबसे बुद्धिमान प्राणी
जो स्वयं को समझता है संसार में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी
क्या उसे सबसे बुद्धिमान कहा जा सकता है
उसके दिल में क्या है, मुख पर क्या है कोई बता सकता है
जब वह अपनी बुद्धिमानी का प्रयोग करता है समाज के लिये
तब मातृभूमि का शीश गर्व से ऊँचा हो जाता है
जब वह कलुषित भावनाओं, पाषाणी वृत्तियों को पूर्ण करने के लिये
अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है तो देश लुट जाता है
कुछ मनुष्य बनावटी मुखौटे लगाकर दिखावटी बातें बनाकर
अपने स्वार्थ और लालच के लिये हर चीज़ में करते हैं मिलावटें
खाने-पीने की चीज़ों दवाइयों, रेत और सीमेंट में भी
मिलावटें कर-कर के भरते हैं समाज में मौत की आहटें
मिलावटी भावनाओं के चलते आपसी रिश्ते तक टूट जाते हैं
रेत के बने मकान, पुल, सड़कें जब ढह जायेंगे
मिलावटी दवाइयाँ और खाना खाकर कितने लोग रह जायेंगे
तब नींवें हिल जायेंगी देश की का यही सौग़ातें देंगे राष्ट्र को
अपनों को दिये आघात क्या कभी उन्हें शान्ति दे पायेंगे
ऐसे कार्य देश में बग़ावत और क्रान्ति ही लायेंगे
काश हृदयहीन, संवेदनाहीन, बेईमान, स्वार्थी यह समझ पाते
कि रेत के बने महल कभी नहीं टिक पाते ○○○

बहते सपने

अश्रु बन कर बह गए
सपने सभी मेरे हृदय के
बिक गए बेभाव जग में
भाव सब मेरे हृदय के

काँच से चटखे कभी हम
कभी पिघले मोम से
आँच से अपनी जले हम
ज़िन्दगी के होम में

इक अजब-सी है कहानी
क्या कहूँ काँटे हृदय के
अश्रु बन कर बह गए
सपने सभी मेरे हृदय के

क्या बतायें, क्या छिपायें
क्या सहें क्या सह न पायें
कौन सी मन्नत करेगी
पूर्ण इस दिल की दुआयें

कौन देखे खोल कर अब
घाव इस घायल हृदय के
अश्रु बन कर बह गए
सपने सभी मेरे हृदय के

ooo

जीने के सहारे

दृष्टिपथ पर आये जबसे तुम हमारे
राह में बिखरे तभी से चाँद तारे

बावरी सी कामना आने लगी मन में हमारे
हम भी बन जायें कहानी और हों चर्चे हमारे
हम क्षितिज के पार जायें साथ में ही तुम हमारे
हम छुएँ आकाशगंगा एक दूजे के सहारे
पास तुम आओ हमारे हम छुपा लें दर्द सारे
एकटक तुमको तकें बस बैठ नदिया के किनारे
बस निरन्तर एक ध्वनि सी गूँजती मन में हमारे
तुम मिलो पथ पर कभी तो पायें जीने के सहारे
होयेगी अवश्य पतझड़ छायेंगी चहुँ दिशि बहारें
होगी रिमझिम, छम-छमा-छम और भिगो देंगी फुहारें

मन में इक अनोखी चाह सी, जागी हमारे
दृष्टिपथ पर आये जब से तुम हमारे

○○○

दिल लगाने की सज़ा

दिल लगाने की सज़ा
हमको तो दिन रात मिली
ग़म मिला, दर्द मिला
रंज की सौग़ात मिली
जो हमें याद किया करते थे आहें भरकर
छोड़ के साथ गये थोड़ी-सी राहें चलकर
अब तो राहें नहीं, मंज़िल भी नहीं
अश्कों की बारात चली
क़स्में, वादे तो सभी भूला है करने वाला
हमने भी डाल लिया अपनी ज़बाँ पे ताला
साँस तो आई
वो तोड़ के जज़्बात चली
आहों को ज़ख़्मों को सीने में छुपाकर रखा
नाम तक ले न सके दिल में दबाकर रखा
जब चली बात
लगा बात ये बेबात चली
दिल लगाने की सज़ा
हमको तो दिन रात मिली
ग़म मिला, दर्द मिला
रंज की सौग़ात मिली

○○○

मैं क्या करूँ

नज़र आ गए कभी नज़र को
कभी हो गए गुम नज़र से
कभी रात दिन मिलते रहे
कभी हो गए गुम सहर से

ऐ मेरे ख़ुदा मुझे तू बचा
दुश्मन की इस बदनज़र से
ये तो क़ातिलों की-सी है अदा
कोई लो बचा इस बशर से

कभी क़स्में लीं किये वायदे
कभी ढाये हमपे बड़े सितम
ये तरीक़ा कौन-सा प्यार का
कोई लो बचा इस क़हर से

न मैं जी सकूँ न ही मर सकूँ
कोई तो बताये मैं क्या करूँ
मेरे अपने प्याले पिला रहे
कोई लो बचा इस ज़हर से

○○○

किधर रौशनी है

कभी दुख भरे दिन
कभी ग़म की रातें
ये कैसी मुक़द्दर में
लिख दी हैं बातें
कभी रौशनी को
तरसते हैं रहते
कभी आँसू आँखों से
बहते हैं रहते
कभी राह में ख़ार ही ख़ार ही रहते
कभी ज़िन्दगी से यूँ बेज़ार रहते
कभी अपनी नज़रों से
ख़ुद ही गिरे हैं
कभी अपने दलदल में
ख़ुद ही घिरे हैं
कभी जब ग़मों से निकलना है चाहा
पड़ा सामने अजनबी-सा दोराहा
मैं जाऊँ इधर
या
उधर को मैं जाऊँ
किधर रौशनी है
किधर को मैं जाऊँ
○○○

कुछ समय और

अरी मौत कुछ तो समय और दे-दे
ज़रा प्यार कर लूँ ज़रा गुनगुना लूँ
हूँ जितना हँसी दिल है उतना ही रोया
जहाँ में क्या पाया सभी कुछ तो खोया

अरी आज दो क्षण तनिक और दे-दे
ज़रा-सा हँसूँ और ज़रा मुस्कुरा लूँ
है रूठी ये क़िस्मत है रूठा ज़माना
तनिक छेड़ लूँ प्यार का ये तराना

करूँ ख़ुश उन्हें जो कि रूठे हुए हैं
ज़रा बात कर लूँ ज़रा तो मना लूँ
अरी मौत कुछ तो समय और दे दे
ज़रा प्यार कर लूँ ज़रा गुनगुना लूँ

जो दिन हैं बिताये वो कैसे बिताये
कुछ कहना तो चाहा मगर कह न पाये
अजब ज़िन्दगी की अजब दास्तानें
कुछ उनकी सुनूँ और कुछ अपनी सुना लूँ

अरी मौत अब तुझको जाना पड़ेगा
ये वादा तो तुझको निभाना पड़ेगा
इक नई चाह-सी जाग उठी है हृदय में
ज़रा प्यार कर लूँ ज़रा गुनगुना लूँ

○○○

निमिष भर

स्वप्न में आकर निमिष भर
छुप गए तुम
पग बढ़ाकर डगर पर
क्यों रुक गये तुम
बीत गये कितने ही सावन
आये न तुम मन के भावन
प्रीत की इस राह में क्यों
थक गये तुम
स्वप्न में आकर निमिष भर
छुप गये तुम
चाँदनी की ओढ़ चादर
आई राका झिलमिलाती
पर हृदय मेरा अँधेरा
कर गये तुम
स्वप्न में आकर निमिष भर
छुप गये तुम
रीत तो ये नहीं है बन्धु
नेह के नाते निभाने की
एक पल का साथ साथी
दे नहीं पाये हमें तुम
स्वप्न में आकर निमिष भर
छुप गये तुम
क्यों अनोखा दर्द आकर
दे गए तुम
पग बढ़ाकर डगर पर
क्यों रुक गए तुम?

○○○

निष्फल कामना

करी कामना जब भी मैंने सूरज चाँद सितारों की
निविड़ तिमिर झोली भर पाया ज्योति न चंदा तारों की

कोमल फूलों को छूने को हाथ बढ़ाया जब मैंने
फूलों की डाली पर केवल काँटे ही काँटे पाये
चाहा प्यार समस्त विश्व का मिली निराशा चारों ओर
प्रेम प्यार प्रीति के बदले व्यंग और लांछन पाये
रही भटकती सदा-सदा मैं मृगमरीचिका के पीछे
किया सरल विश्वास सभी पर, छल प्रपंच मैंने पाये
दिग्भ्रम मुझको हाय हो रहा लक्ष्य कहाँ पथ है किस ओर
किंकर्तव्यविमूढ़ हो रही हृदय शान्ति कैसे पाये
नहीं किसी ने धैर्य बँधाया दिया सहारा नहीं कभी
करी नहीं परवाह किसी ने मेरी करुण पुकारों की

करी कामना जब भी मैंने सूरज चाँद सितारों की
निविड़ तिमिर झोली भर पाया ज्योति न चंदा तारों की

○○○

दर्द की लहरें

दर्द की लहरें मुझे आकर सुलातीं
दर्द से भीगी मुझे लोरी सुनातीं
दर्द की लहरें मुझे आकर जगातीं
अब सिवाए दर्द के क्या रह गया है
ज़िन्दगी में दर्द ही मैंने जिया है

मौत में भी ज़िन्दगी देती दिखाई
ज़िन्दगी में मृत्यु स्वर देता सुनाई
नित सुनाते रंजो-ग़म अपनी रुबाई
बोल तो तूने अभी तक क्या किया है
ज़िन्दगी में दर्द ही मैंने जिया है

सब चले जब छोड़ करके बेसहारा
दर्द ही साथी बना मेरा सहारा
हार कर छोड़ा सभी ने यह न हारा
बोझ देकर बोझ मेरा ले लिया है
ज़िन्दगी में दर्द ही मैंने जिया है

आज आकर्षण नहीं कुछ ज़िन्दगी में
बस विकर्षण ही विकर्षण ज़िन्दगी में
आह संघर्षण रहा क्यों ज़िन्दगी में
क्यों हमेशा गरल ही मैंने पिया है
ज़िन्दगी में दर्द ही मैंने जिया है

क्यों किसी का मैं भला उपकार मानूँ
क्यों किसी से मैं भला प्रतिकार न लूँ
जुल्म सारे क्यों भला स्वीकार कर लूँ
क्या किसी ने आज तक मुझको दिया है
ज़िन्दगी में दर्द ही मैंने जिया है ○○○

क्यों?

मेरी तन्हाइयों ने
जब भी ख़ामोशी तोड़ी
बस एक सवाल पूछा
मेरे ख़ुदा
मेरी ज़िन्दगी इतनी वीरान क्यों है
मेरे दिलो-दिमाग़ इतने परेशान क्यों हैं
मेरी राहें इतनी अनजान क्यों हैं
मेरी मंज़िलों के रास्ते में
इतना ख़ार क्यों हैं?
मेरी ज़िन्दगी इतनी बेज़ार क्यों है
चाँद सितारों से भरी दुनिया में
मेरे लिये सिर्फ़ अन्धकार क्यों है
और अगर यही सब देना था
तो क्यों मुझे एक
धड़कता दिल दिया
क्यों मेरे दिल में
गुलो-गुलज़ार के लिये
बाग़ो-बहार के लिये
दोस्त अहबाब के लिये
क़ुदरत के शबाब के लिये
बेहिसाब तड़प भर दी
क्यों मुझे सबसे दूर करके
कभी ख़त्म न होने वाले
सन्नाटे दे दिये
क्यों मेरी झोली में सिर्फ़
वीरानियाँ और तन्हाइयाँ भर दीं
क्यों? क्यों? क्यों? ○○○

रीता आँचल

मेरे भगवान
सुनती हूँ
जितना जिसका आँचल था
उतनी ही सौग़ात मिली
जो क़िस्मत में था
वही मिला
मैंने जब-जब एकान्त को जिया
अकेलेपन के एहसास को झेला
भीड़ में अकेलेपन की
घुटन को महसूस किया
अपनों की नज़रों में छुपे
बेगानेपन का अनुभव किया
दूर जाते अपनों की
पराई नज़रों को पहचाना
तब-तब तुझसे एक प्रश्न पूछना चाहा
आँचल बनाने वाला भी तू है
क़िस्मतों का ख़ुदा भी तू है
फिर सारे छेद
मेरे आँचल में ही क्यों?
तू ही बनाने वाला
तू ही देने वाला
फिर तूने क्यों मेरे आँचल को
रीता कर दिया
तूने क्यों मेरे भाग्य को
शून्य से भर दिया?

○○○

दर्द की चूनर

ओढ़ ली है एक चूनर दर्द की
दिल से निकली आह ग़म की सर्द सी
घूमते फिरते हैं दुनिया में
छुपाये दिल के राज़
छोड़कर जो चल दिये
हम दे रहे उनको आवाज़
टूटते सपनों के अहसासों तले
हब दबे रहते हैं अपने बोझ से
छूटते अपने को कैसे रोक लें
कोई दो आवाज़ उनको ज़ोर से
हो रही है साँस भी अब ज़र्द सी
अपने हाथों ख़ुद को पहनाते कफ़न
कल लिया हमने है यूँ ख़ुद को दफ़न
ढूँढना चाहें कभी ख़ुद को अगर
ढूँढ न पाये हमें ख़ुद की नज़र
कब तलक पीना है जीने का ज़हर
कब तलक सहना है जीने का क़हर
क़िस्मतों पे छा गई है गर्द सी
दिल से निकली आह ग़म की सर्द-सी

ooo

बढ़ते रहो

डरो मत
झुको मत
रुको मत
किसी से न कहना
किसी को न सहना
न पीछे ही रहना
न अधूरे रहो
काम पूरे करो
सिर उठाकर जियो
उधर मत करो
प्रहार मत करो
आह मत भरो
हँसते रहो
चलते रहो
बढ़ते रहो
तन में शक्ति हो
हृदय में भक्ति हो
शुभ कर्मों में आसक्ति हो
सागर की गहराइयाँ जीत लो
पर्वतों की ऊँचाइयाँ जीत लो
भारत के जन-जन में
परस्पर प्रेम-प्रीत हो

○○○

तेरी ख़ुशबू मीठी सी

हवायें झूमती होंगी फूलों को चूमती होंगी
फूलों की मदभरी ख़ुशबू बहक कर चूमती होंगी
वो जाती रात को देखो सवेरा ले के आई है
किसी की मौत ही आख़िर किसी की ज़िन्दगी होगी
पुकारूँ सब तरफ़ तुझको छुपा बैठा कहाँ है तू
तेरे चरणों में मेरी, आख़िरी मंज़िल सदा होगी
कली को देख मुस्काते, पुकारें फूल बगिया के
मुरझाये आज हम, बारी तुम्हारी आ रही होगी
बनाई क़िस्मतें तूने, तेरी मर्ज़ी मेरे भगवन्
मेरे दिल में लगी जो टीस, वो तेरी दिल्लगी होगी
सदा तेरी कृपा ही हो, रहें ख़ुशहाल हम बन्दे
तेरी ख़ुशबू हो सबके घर, बिखर कर मकहती होगी
हमें भेजा है दुनिया में, वो दिन हम काट जायेंगे
लौटकर तो मेरे भगवन्, तेरे चरणों में आयेंगे
तेरे आँगन में स्वामी बुलबुलें तो चहकती होंगी
फूलों की मदभरी ख़ुशबू बहक कर चूमती होंगी
ये गोरखधन्धे दुनिया के, हमें हर रोज़ ठगते हैं
मिले कैसे हमें मुक्ति सोचते हरदम रहते हैं
कहाँ गुम हो गई वो हवायें, चूमती थीं जो फूलों को
कहाँ खो गई वो ख़ुशबू, बहक कर झूमती थी जो
कहाँ खोई वो दुनिया तेरे आगे थिरकती थी जो
क्या तेरी कृपा भी मेरे भगवन् हमसे रूठती होगी
क्या मेरे दिल में है जो टीस वो तेरी दिल्लगी होगी
तेरे चरणों में मेरी, आख़िरी मंज़िल सदा होगी

ooo

ज़िन्दगी कितनी बेमानी

ज़िन्दगी कितनी बेमानी लग रही है
अपनी आवाज़ तक बेगानी लग रही है

धोखे कितने खाने हैं जीने के लिये
जीना तो है हमें ज़हर पीने के लिये

हर क़दम पर लोग आ गये हैं हँसने को
ये ज़िन्दगी में हम कहाँ आ गये हैं फँसने को

ये कैसी आग है जो खा रही कलेजे को
ये मेरी ज़िन्दगी कहाँ ले के जा रही मुझको

हर साँस दुख भरी कहानी लग रही है
ज़िन्दगी कितनी बेमानी लग रही है

कोई भी याद नहीं अतीत को याद करने के लिये
ज़िन्दगी जीते रहे खुद को बरबाद करेने के लिये

जाने कैसे-कैसे लोग ज़िन्दगी में मिलते रहे
हम उनके दिये घावों को सदा सिलते रहे

अब तो बस एक तमन्ना है कि मर जायें किसी दिन
ज़िन्दगी के अजाब से हम छुट जायें किसी दिन

मौत की बात भी कितनी सुहानी लग रही है
ज़िन्दगी कितनी बेमानी लग रही है

कुछ दर्द सा क्यों

मेरे दिल में कहीं कुछ दर्द-सा क्यों होता है
भरी ख़ुशी में भी दिल सर्द-सा क्यों होता है

कभी तूफ़ान के आने के आसार नज़र आते हैं
कभी हम ज़िन्दगी से बेज़ार नज़र आते हैं

कभी अचानक ही क्यों चौंक उठते हैं
कभी मन ही मन क्यों बिलखते हैं

कभी दिल में कुछ अरमान भी मचलते हैं
कभी कुछ सोचकर हम दहलते हैं

कोई अनजान डर डराता है
अश्क दिल हर समय बहाता है

कैसी वीरानी दिल पे छाई है
ज़िन्दगी में ख़िज़ाँ-सी आई है

दिल ये पत्तों की तरह ज़र्द-सा क्यों होता है
मेरे दिल में कहीं कुछ दर्द-सा क्यों होता है

○○○

दो पल के लिये

अब कहीं जा के मैं सो जाऊँगी दो पल के लिये
तेरी यादों को भुलाने की क़सम खाऊँगी दो पल के लिये

हसरतें होती हैं क्या, कहते हैं अरमान किसे
मैं ये अलफ़ाज़ भुलाने की क़सम खाऊँगी दो पल के लिये

दर्दो-ग़म जो भी मिले दिल में छुपा लूँगी उन्हें
दर्द बन जाये दवा काश कि दो पल के लिये

राह-ए-मंज़िल तो गई साथ तेरे दोस्त मेरे
फिर भी राहों पे चलूँ मैं ये क़सम खाऊँगी दो पल के लिये

सब ख़त्म होता है इन्सान फिर भी जीता है
मैं भी जीने की क़सम खाऊँगी दो पल के लिये

गाना हँसना तो बन गये सपने
काश सपने में ही हँस पाऊँ दो पल के लिये

दो पल की ज़िन्दगी में सभी कुछ है दो पल के लिये
तो क्यों ने ज़िन्दगी को पूरी तरह जी लूँ दो पल के लिये

ooo

कुछ बीते क्षण

क्यों वक़्त ने ढूँढ लिये कुछ बहाने
कुछ बीते क्षण आ गये सताने
चाहते थे ख़ुद को और दुनिया को भूल जायें
सब कुछ भुलाकर सुख सपनों में झूल जायें
हर बीती याद को छुपा दें किसी कोने में
क्या रखा है अतीत की भूलों पर रोने में
बरसों से जो आँसू छुपाये हुये थे आँखों में
यादों की जो सौग़ातें सहेज कर रखी थी पाँखों में
कुछ तीर जो वक़्त-वक़्त पर खाते रहे
जिनकी नोकों को हम फूल मानकर भुलाते रहे
कुछ काँटे जो दिल में गड़ते रहे
जिनके साथ-साथ हम ज़िन्दगी में बढ़ते रहे
आज न जाने क्यों
सब कुछ उघड़कर
सामने आ गया है
लगा जैसे सब कुछ अभी हुआ है
आज जी चाहता है
अपने लिये रोने को
जी भर कर रोकर
चैन की नींद सोने को
क्यों बीता युग आ रहा है मुझे रुलाने
क्यों बीते क्षण आ गये सताने

ooo

वेदना सृजन की

वेदना सृजन की सही नहीं जाती
अन्तर के स्पंदन की बातें कही नहीं जातीं
हृदय में उमड़ते तूफ़ान
मस्तिष्क में उफ़नता ज्वारभाटा
होठों तक आने को मचलते उबाल
अनदेखे अनबूझे सुख दुख
दुखते कसकते घाव
भयावह विडम्बनाओं से त्रस्त
दारुण त्रासदी से ग्रस्त ग्रन्थियाँ
खुलने को आतुर हैं
अन्तर की समस्त वेदनायें, संवेदनायें
अनुभूतियाँ भावनायें
बाहर आने को व्यग्र हैं
अब चुप रहा जाता नहीं
सृजन की वेला है
हृदय की समग्र भावनायें
काग़ज़ पर उतरने को प्रस्तुत हैं
अब और मन ही मन कही नहीं जाती
वेदना सृजन की सही नहीं जाती

ooo

मेरे देशवासियों

मेरे देशवासियों ऊँचा नाम देश का करना है
जनम-जनम हम यहाँ रहेंगे और यहीं पर मरना है
यह धरती है भारत माता हम सब इसके बेटे हैं
सदा शीश ऊँचा रखना हम नहीं किसी से हेठे हैं
यह धरती है महावीर की राम कृष्ण और गौतम की
जिनकी वाणी के प्रताप से है सारी दुनिया चमकी
पृथ्वीराज, राणा प्रताप और वीर शिवा की यह धरती
भगत सिंह, आज़ाद, जवाहर और सुभाष की यह धरती
वेद, उपनिषद् लिखने वाले साधू सन्त यहाँ जनमें
सूर, कबीरा, तुलसी, मीरा पूजे जाते घर-घर में
राह दिखाने नई आये इस युग में थे बापू गाँधी
पथ से जिन्हें विचलित न कर सकी गोरों की काली आँधी
साल हज़ारों बीते कितने आये गये न फिर मुड़कर
रहे यहीं घर धाम बनाकर धरती माता से जुड़कर
कोई जाति हो कोई धर्म हो यह धरती सबकी माता
जो पहचाने यह सच्चाई नहीं लौटकर फिर जाता
जिसके चरण पखारे सागर सिर पर मुकुट हिमालय है
सब धर्मों का वास यहाँ पर घर-घर में देवालय है
हिलमिल कर सब रहें हृदय में बहे प्रेम का झरना है
पूर्ण विश्व परिवार हमारा यही हमारा सपना है
धर्म जाति बोली भाषा की दीवारों को गिरना है
जनम-जनम हम यहाँ रहेंगे और यहीं पर मरना है

ooo

एक-एक ग्यारह हो जाते

गई बाग़ में फूलों से मिलने
काँटों ने भी दुत्कारा

आँसू भरकर मुड़ जो चली मैं
तभी सुना इक हुँकारा

देखा घास का नन्हा तिनका
झूम रहा धीरे-धीरे

मुझे देखकर बोला साथी
आ जाओ मेरे तीरे

एक दूसरे के साथी बन
जीतेंगे पूरी दुनिया

एक-एक ग्यारह हो जाते
देखेगी सारी दुनिया

सुन्दर और बड़ा होने से
बड़ा नहीं कोई होता

सबसे बड़ा वही जिसका मन
दूजों के दुख में रोता

○○○

दिल भी कह उठता है

डूब जाओ इस तरह सागर में दोस्त
पूछती रह जायें क्या कोई आया यहाँ
दाहिना जब हाथ बढ़ जाये कुछ देने के लिये
बाँए को भी न पता लगे कि दाहिने ने क्या किया
दर्द जब बढ़ने लगें तो छिपा ला दिल के किसी कोने में
आँख भी न बता पाये कि दिल में क्या हुआ
सोचने को तो बहुत कुछ है दुनिया में
पर कभी-कभी सोच पर भी पहरे लगाना ज़रूरी है हुआ
आँख ने देखा कान ने सुना जीभ ने कह डाला
दिल ने महसूस किया क्या कोई दूरी है यहाँ
फिर भी कुछ लम्हों में जिए गए
कुछ जज़्बात ऐसे होते हैं
जिनको छिपाकर दिल भी कह उठता है
नहीं कुछ भी तो नहीं हुआ यहाँ

ooo

प्यारी जन्मभूमि मेरी

जननी जन्मभूमि मेरी
प्यारी जन्मभूमि मेरी
तेरे चरणों में ही रहूँ
एक यही इच्छा मेरी
तेरा यह नीला अम्बर
तेरी नदियाँ और सागर
नभ छूते पर्वत तेरे
हिमगिरि शीश मुकुट तेरे
सोने सी धरती तेरी
प्यारी जन्मभूमि मेरी
काले मेघा भी आयें
गरज सुधा जल बरसायें
सूरज की किरणें चमकें
चंदा की चाँदनी दमके
ओढ़े तारों की चुनरी
प्यारी जन्मभूमि मेरी
भाँति-भाँति की जलवायु
भाँति-भाँति के लोग यहाँ
तरह-तरह के पहनावे
भिन्न-भिन्न भाषायें यहाँ
इन्द्रधनुष सी सतरंगी
संस्कृति है कितनी गहरी
प्यारी जन्मभूमि मेरी
जाति धर्म चाहे जितने, दिल हैं सबके एक यहाँ
ईश, यीशु, गुरुदेव, ख़ुदा, देते सबको रोज़ दुआ
सभी पुत्र इस धरती के, भारत माँ के हैं प्रहरी
जननि जन्मभूमि मेरी, प्यारी जन्मभूमि मेरी ○○○

जल भरे बादल

गरजते-गरजते आ गए
बरसते-बरसते आ गए
ढमकते-ढमकते आ गए
चमकते-चमकते आ गए
ये बादलों के झुण्ड
कहाँ गए थे कहाँ से आ गए
जा-जा कर बरसे
हर घर हर आँगन में
फूल-पात पेड़ों से मिले
वन उपवन कानन में
प्यासी धरती की
प्यास वो बुझा गए
खेतों में बरसे
कृषकों को हरषा गए
धरती की छाती पर
सैंकड़ों दरारें थीं
पर दरारों में छिपी
अनगिनत बहारें थीं
धरती की प्यास बुझाने बहारों को बाहर बुलाने
छम-छम बरस कर धरती को सरसाने
गहरते-गहरते आ गए लहरते-लहरते आ गए
कहाँ से इतना जल भरकर ले आये
कैसे ये ढोल बजाते गाजे-बाजे के संग आये
नाचते गाते कहाँ से बा गए
जल भरे बादल कहाँ से आ गए

○○○

धरती अम्बर के ख़ज़ाने

आसमान में इकट्ठे हुए ढेर से घड़े
एक-एक घड़े में ख़ज़ाने थे गड़े

टकरा गए घड़े आपस में अनजाने में
चमकी बिजली गरजा अम्बर उनके टकराने से

टकराये जो आपस में बड़े-बड़े घड़े
अनगिनत हो गये उनमें छेद छोटे बड़े

छलनी से बन गये घड़ों के तले
झरने लगे ख़ज़ाने घड़ों के तले

छम-छम-छम बरसने लगे खेतों खलिहानों में
झम-झम-झम झूम उठे जंगल वीरानों में

रिमझिम फुहार पड़ी फूल और पात पर
बरसे वो दिन-दिन भर बरसे वो रात भर

अम्बर के ख़ज़ाने भरे धरती के आँचल में
लहलहाई धरती चमके मोती हर आँगन में

बारिश की हर बूँद बदल गई दानों में
हो गई मित्रता धरती अम्बर के ख़ज़ानों में

○○○

अन्तर में ज्योति किरण

भारत माँ के वीर सपूतों
डरना नहीं किसी से तुम
अन्तर में ले ज्योति किरण
बढ़ना आगे-आगे तुम

चाहे पर्वत रोकें राह
चाहे आगे सरित प्रवाह
बिजली अम्बर में कड़के
नहीं तुम्हारा दिल धड़के
आगे आये अगर पहाड़
शेर लगाये अगर दहाड़
शत्रु डरा न सके तुम्हें
भागे आता देख तुम्हें

आयें आँधी या तूफ़ान
या आयें जंगल सुनसान
कितने घोर अँधेरे हों
बादल घने घनेरे हों
खोयें दिशायें भूलें राह
पर तुम कभी न भरना आह
सूर्य चन्द्र को करना याद
रात के बाद सदा है प्रात

किसी के आगे न झुकना तुम
नहीं किसी से डरना तुम
अन्तर में ले ज्योति किरण
बढ़ना आगे-आगे तुम

ooo

तुम मुस्काना

न घबराना
न शरमाना
न रोकर कभी बैठ जाना
न अपने से तुम ऐंठ जाना
जीवन तो अजब कहानी है
कभी आग कभी ये पानी है
जो मिले उसे अपनाता चल
हर पल दिल को बहलाता चल
चढ़-चढ़ कर तुम गिरते जाना
गिर-गिर कर तुम चढ़ते जाना
चढ़ना और गिरना दोनों ही
दो पहलू जब-जब देखो
मानो क़िस्मत के चक्के हैं
कभी है चढ़ना
कभी है गिरना
न भय खाना
न डर जाना
चलते रहना
चढ़ते रहना
है लक्ष्य तुम्हें
अपना पाना
तुम मुस्काना
तुम मुस्काना

ooo

कुदरत के साथ

सुर मिलाकर चहचहाते पक्षियों के मधुर स्वर से
छेड़ लो एक ताना कुदरत के साथ
कोयल की कुहू-कुहू पपीहे की पीहू-पीहू
चिड़ियों की चूँ-चूँ चीं-चीं के साथ
कौए की काँव-काँव पर भी थोड़ा सा हँस कर
उसकी भी सुन लो प्यार के साथ
कैसी मशीन सी जी रहे हो ज़िन्दगी
भर लो कुछ रंग कुदरत के रंगों के साथ
झींगुर की झनन-झनन भँवरे की गुन-गुन
सबमें सुनोगे मीठी पायल की रुनझुन
तितली के रंगों में जीवन के रंग सारे
घुल-घुल जायेंगे तुम्हारे अंगों में सारे
अधखिली कलियों को फूल बनते देखो
घास पर ओस की बूँदों ने पिरोये मोती देखो
ताल के ठहरे पानी में एक कंकर फेंको
आ जायेगा उसमें नया जीवन
अपनी ठहरी ज़िन्दगी में भी बन्धु
कुदरत के एक-एक रंग से भर लो जीवन
मशीनों का साथ छोड़कर
कुदरत से मिला लो हाथ
छेड़ लो एक तान कुदरत के साथ

ooo

इन्सान इतना स्वार्थी क्यों

फूलों के पसीने से बना इत्र लगाकर महकता है
इन्सान भी कैसे-कैसे बहकता है
कभी बनकर अमरबेल चूस लेता है दूसरों का ख़ून
इतना स्वार्थी क्यों बन जाता है वह
ये चढ़ता है उस पर कैसा जुनून
अपनी जीभ के स्वाद के लिये
उड़ने वालों में पतंग की छोड़कर सबको खा सकता है
चारपाई को छोड़कर हर चौपाये को डकार सकता है
चूहे तक को नहीं छोड़ता
कुएँ तालाब नदी समन्दर
सबके निवासियों को भून कर खा सकता है
यह बात वह बड़े गर्व से कहता है
ये कैसा जुनून उसके सर पर चढ़ता है
दानवीर वृक्षों के फल धरती माँ के खेतों के अनाज
क्यों उसे सन्तोष नहीं दे पाते
निर्दोष पशु-पक्षियों को क्यों हैं सताते
पहाड़ों तक को बारूद से उड़ाकर
हरे-भरे खेतों को बंजर बनाकर
जंगलों को काट-काट कर
बना रहा है अम्बर छूते कंक्रीट के जंगल
सागर तक से ज़मीन छीनकर बना लेते हैं महल
भला कैसे रह पायेगा उसके अपने जीवन में मंगल
स्वार्थ पूरा होने पर हँसता है
फूलों के पसीने से बना इत्र लगाकर महकता है

ooo

निराश न होना तुम

जो अब तक हुआ अच्छा ही हुआ
जो आगे होगा अच्छा ही होगा
जीवन में सुख दुख दोनों ही हैं
सब था अपना जो भी भोगा
जो बोया था वह काटा है
जो बोयेंगे वह काटेंगे
ज़िन्दगी तो सचमुच एक जुआ है
दूसरों की राहों में काँटे बोये बिना
साफ़ करते चलो अपनी राहें
ख़ुद को ऊँचा उठाने के लिये
ख़ुद ऊँचे उठो
गड्ढे न खोदो दूसरों के वास्ते
उन्हें गिराने के लिये गिरते नहीं तुम ख़ुद नीचे
कोई ग़लत काम न करो मूरख की तरह आँखें मीचे
ज़िन्दगी के रेगिस्तान में तो
सुख आते हैं कभी मरुद्यानों की तरह
फिर निराश न होना
उड़ जायेंगे दुख जैसे उड़ता धुआँ
सुख दुख की हेरा-फेरी में
न कभी अपना सन्तुलन खोना
बस तुम एक बात सोचना
जो अब तक हुआ अच्छा ही हुआ
जो आगे होगा
वह भी अच्छा ही होगा

ooo

ज़िन्दा उसे कैसे करूँ

मर गया जो मेरे अन्दर ज़िन्दा उसे कैसे करूँ
जज़्बात दफ़्न जो हो गये ज़िन्दा उसे कैसे करूँ
बरसों पर बीते बरस हैं चैने से कुछ सोचने को
अब तो लगता है ज़िन्दगी में है नहीं कुछ सोचने को
दिल के कोनों में भरा कुछ जो नहीं पहले हुआ था
दिल में और पूरे ज़ह्न में भर गया है इक धुआँ-सा
जिसमें मैं लेकर आई थी सपने
ये तो वो घर ही नहीं है
प्यारे सपने मीठ सपने वहाँ होंगे सब मेरे अपने
पर यहाँ तो कुछ भी वैसा नहीं जो मेरे सपनों में था
समझ में आता नहीं कुछ
क्या ये है क़िस्मत का धोखा
कभी मुझको न मिलेगा पीछे जो मैं छोड़ आई
न मैं इनकी न मैं उनकी सब्र मैं कैसे करूँ
लगता अन्दर ख़त्म है सब, बेजान सब कैसे रहूँ
चलती-फिरती लाश जो तानों से छलनी हो रही
अमृत की दो बूँद उसमें मैं भला कहाँ से रखूँ
कुछ नहीं टिकता है इसमें बह रहा सब कुद मेरा
मर गया जो मेरे अन्दर ज़िन्दा उसे कैसे करूँ

○○○

कल छोड़ आई मैं माँ का घर

आई जीवन में नई सहर कल छोड़ आई मैं माँ का घर
जैसे बच्चे का पहला दिन विद्यालय में
मैं भी आ पहुँची श्वसुरालय में
हैं सास, ननद, देवर सबजन, हैं श्वसुर मगर आलय तो नहीं
जो मुझे दिखाई देता है वह है मकान पर घर तो नहीं
है जहाँ प्रेम का नाम नहीं वह घर कैसे हो सकता है
मैं छोड़ आई माँ बापू को अब हृदय याद कर रोता है
सोचा था यहाँ मिलेगी माँ और श्वसुर मिलेंगे बापू से
भैया जैसे होंगे देवर बहनों जैसी होंगी नन्दें
मेरा घर स्वर्ग सदृश होगा सब ही तो हैं अपने बन्दे
ख़ुशियों से रहेंगे हिल-मिल कर न कोई शिकायत न हो गिला
है भाग्य बड़ा अच्छा मेरा जो भरा पुरा परिवार मिला
पर कभी न सोचा था जो मिला
ऐसा भी कभी क्या होता है
क्या एक दिवस के लिये प्रभु क़िस्मत को बदल नहीं सकता है
छूटा माँ का घर छूटे अपने
कुछ लम्हे ही तो बीते थे टूटे अरमाँ टूटे सपने
क्या इसीलिये माँ बचपन से तैयारी करती आई थी
मेरे विवाह की ख़ुशियों में वह फूली नहीं समाई थी
कैसे मैं उसको बतलाऊँ कैसे तेरी लाडो जीये
क्षण-क्षण मर-मर कर जीती है
पल-पल वो ज़हर के घूँट पिये
सुनकर वो मरेगी जीते जी
रो-रो कर ही मर जायेगी
है इसीलिये सहना मुझको चुपचाप सभी कुछ जीवन भर
कल छोड़ आई मैं माँ का घर

○○○

कुल मिलाकर

कुछ अधूरे अरमान कुछ अधूरी तमन्नायें
कुछ अनबुझी प्यास-सी तड़पती भावनायें
कुछ टूटे वादे कुछ झूठे वादे
टूक-टूक हुए कुछ इरादे
कुछ दूर होते अपने
कुछ चूर होते सपने
कुछ मग़रूर से ख़्यालात
कुछ मजबूर से अहसासात
कुछ अनसुनी रूदाद
कुछ भूली हुई फ़रियाद
कुछ खोये हुए रास्ते
ज़िन्दगी भर भटके जिनके वास्ते
खोई हुई मंज़िल
टूटा हुआ दिल
कोई छोटा-सा सुख
कोई बड़ा-सा दुख
कुल मिलाकर ज़िन्दगी यही सब बनाते हैं
हँसाते कम हैं ज़्यादा रुलाते हैं
हमेशा करते हैं सब
ख़ुशियों की कामनायें
मिलते हैं अधूरे अरमान
अधूरी तमन्नायें

○○○

आओ परदेसी सावन ऋतु आई

आओ अब तो परदेसी पिया आओ
सावन ऋतु आई रे!
गीत गायें मेरी सारी सखियाँ
रोये मेरी शहनाई रे!
बीते कितने बरस राह निहारूँ हरदम
और कुछ न कहूँ तुम्हें पुकारूँ हरदम
याद आयें तुम्हारी सारी बतियाँ सावन ऋतु आई रे।

अँबुआ की डारी पे बोले कोयलिया
दूर कहीं नदिया पे बाजे मुरलिया
तुम तो भूल गये मोरी गलियाँ सावन ऋतु आई रे।

सावन के गीत गायें नाचें सहेलियाँ
गीत मेरे चुप हैं मोरी बाजे न पायलिया
परदेसी कैसे सुलझे पहेलियाँ सावन ऋतु आई रे।

मोरे मन मंदिर में मूरत तुम्हारी
कैसे भूल पाऊँ मैं सूरत तुम्हारी
आग जैसी लागें सावन की बुँदियाँ
सावन ऋतु आई रे।
आओ अब तो परदेसी पिया आओ
सावन ऋतु आई रे।

ooo

ज़िन्दगी एक अनबूझ पहेली

ज़िन्दगी क्या है
एक अजीब अनबूझ पहेली
कभी दुश्मन कभी सहेली
जब हँसाती है तो लगता है हर तरफ़ सुख ही सुख
जब रुलाने पर आती है
तो दिखाई देता है सिर्फ़ दुख ही दुख
सुख में लम्बी उम्र की दुआयें माँगते हैं
दुख में मौत की दुआयें माँगते हैं
ज़िन्दगी को अपने ढंग से घुमा देना चाहते हैं
दुख के दिन फिरते ही
मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चल
शुरू हो जाती हैं प्रार्थनायें
दिल में जागले लगती हैं नई कामनायें
नये-नये सपने नई-नई योजनायें
उमड़ने लगती हैं नेह भरी भावनायें
सपना पूरा होते ही बढ़ जाता है ज़िन्दगी के प्रति मोह
और अगर कहीं सपना टूट गया
तो फिर वहीं निराशा के खोह
कभी बहारें कभी ख़िज़ायें
कभी आशायें कभी निराशायें
कभी फूल कभी शूल
कभी धन कभी धूल
कभी झोंपड़ी कभी हवेली
ज़िन्दगी क्या है...
एक अनबूझ पहेली

○○○

जंगल की रसभरी हवायें

अठखेलियाँ करती हवायें
रंगरेलियाँ करती हवायें
आ रहीं जंगल से रसभरी हवायें
साथ घुल-घुल कर आ रहीं हरियालियाँ
जैसे घरों से निकल रही हैं
इत्र की सुगन्ध उड़ाती घरवालियाँ
पत्तों से छन-छन कर छनन-छनन करती
पाज़ेबों सी बजती आतीं हवायें
झन-झन-झन-झनन-झनन
झनक रहा पात-पात
सन-सन-सन-सनन-सनन
आती हवायें
डाल-डाल डोल रही हवाओं के साथ-साथ
साथ-साथ मधुर गीत गा रहे हैं पात-पात
छन-छन-छन पत्तों की बज रही पायलिया
बाँसों के पेड़ों की बज रही मुरलिया
घोल रहा जंगल का कण-कण संगीत है
हवाओं की ताल में बस नृत्य है गीत है
आ रहीं जंगल से महकती हवायें
आ रहीं जंगल से चहकती हवायें
पक्षियों के कलरव से गूँजती हवायें
आ रहीं जंगल से रसभरी हवायें

ooo

मंज़िलें तो और भी हैं

एक मंज़िल खो गई तो क्या हुआ
साथ तेरे अब भी है प्रभु की दुआ
ज़िन्दगी तो नाम है संघर्ष का
हर क़दम पर सामना दुद्धर्ष का
एक मंज़िल ढूँढते जब मिलते ढेरों रास्ते
अंत में चुन लेते एक ही राह अपने वास्ते
भाग्य या दुर्भाग्य से मंज़िल न वो तुमको मिली
तो ये क्यों तुम सोचते न प्रभु कृपा तुमको मिली
शायद उससे अच्छी मंज़िल है तुम्हारे भाग्य में
मंज़िलें तो और भी हैं मेरे प्रभु के राज्य में
रात कितनी ही अँधेरी सुबह आयेगी ज़रूर
राह कितनी ही कठिन हो लक्ष्य तक जायेगी दूर
खो भी जाये लक्ष्य तो भी ख़ुद को खोना न कभी
ख़ुद को खो डाला अगर तो ज़िन्दगी खो जायेगी
देखा होगा मकड़ी को जो चढ़ के गिरती, गिर के चढ़ती
अपनी मंज़िल को न तज गिर-गिर के वो आगे ही बढ़ती
छोड़ दी गर आस जीवन उड़ेगा बनकर धुआँ
एक मंज़िल खो गई तो क्या हुआ
साथ तेरे अब भी है प्रभु की दुआ

○○○

आँखों में उतरा दर्द

वह...
किसी एक घर की लाडली बेटी
किसी एक घर की बहू
माँ ने विदाई के समय शिक्षा दी
बेटी ससुराल जाने के बाद
अर्थी में ही घर छोड़ती है अच्छे घर की बेटी
पति ने पहले दिन ही चेतावनी दे दी
देखा मुँह बन्द रखना जो कहा जाये अच्छी तरह करना
न करने पर इस घर में कोई जगह नहीं होगी- वरना
पंछी सी आज़ाद माँ की लाडली रह गई सहम कर
आवाज़ दी भगवान को हे ईश्वर रहम कर
फिर शुरू हो गये ताने, व्यंग बाण और मखमल में लपेटी तीखी गालियाँ
हर बात पर एक वाक्य- क्या माँ-बाप ने कुछ नहीं सिखाया
सबको खुश करने की कोशिश रही नाकाम
क्षण-क्षण में उसकी इज़्ज़त होती रहती थी नीलाम
पिता का गर्व से दिया गया पुरस्कारों और शिक्षा प्रमाणपत्रों का बक्सा
फेंक दिया गया पुरानी चीज़ों के स्टोर में
सारी डिग्रियाँ हो गईं बेकार
सबका एक ही वाक्य उसे पढ़ा-लिखा होने की याद दिलाता था
पढ़ाई का मत करना अहंकार तुम तो हो ही बिल्कुल बेकार
शायद उसमें हीनभावना भरने के लिये
शायद उसे नीचा दिखाने के लिए
आँखों में नई ज़िन्दगी के सपने संजोये
अपने आदर्श, उसूलों और अनुशासन के लिये प्रसिद्ध वह लड़की टूटने लगी
आँखों में भरे ज़िन्दगी जीने के सपने खो गये

आँखों में उतरे दर्द ने होंठ भी सी दिये
दिल-दिमाग़ हो गये फेल जीवन लगने लगा सिर्फ़ एक जेल
पर उसकी आँखों में उतरे दर्द को पढ़ने वाला कोई नहीं था
वह हैरान थी- मैं कौन हूँ? मेरा अपना घर कौन सा है?
शायद कोई भी नहीं क्योंकि माँ के घर से विदा हो चुकी हूँ
पति के घर से पल-पल निकाली जाती हूँ
सोचते-सोचते दिल और दिमाग़ कुण्ठित हो जाते
उसकी आँखों में उतरा दर्द और गहरा जाता
उसे आँसू बनकर बाहर निकलने की इजाज़त नहीं थी
इसलिये वह आँखों में ही ठहरा रहता
लेकिन उसके होठों की रोती हुई मुस्कान
उसकी आँखों के दर्द को और बढ़ा देती
कैसा था वह दर्द जो न कहा जाता था न सहा जाता था
न कोई सुनने वाला न कोई समझने वाला
कैसी छा गई है ज़िन्दगी पर गर्द
जो कोई देख नहीं पाता उसकी आँखों में उतरा दर्द

ooo

प्रश्नों का दलदल

अनगिनत प्रश्नों का दलदल है चहुँ ओर छाया
कितनी अजब है यह दुनिया की माया
दलदली गली में मैं बच-बच के निकली
मगर पैर फिसला अरे मैं चली
ये कैसा है दलदल फँसी जा रही मैं
मैं कितना ही निकलूँ धँसी जा रही मैं
अपनों को पराया बनते है देखा
परायों से अपना बनना है सीखा
फिर अपने पराये में है भेद कैसा
जिसे समझो अपना वही अपने जैसा
करे तुम पर विश्वास उसे धोखा न देना
कभी भी बन्धु तुम जयचंद न बनना
अपनों से कभी राजनीति न करना
बड़ा कठिन होता है विश्वासघात सहना
ये दुनिया में कैसे-कैसे मिलते हैं लोग
किसी के आगे बढ़ने से जलते हैं लोग
ये दुनिया की सोच भी है कितनी विचित्र
पता न लगे कौन है शत्रु और कौन है मित्र
कुछ अपने ही क्यों लूट लेते हैं इज़्ज़त
लुटने वाला ही समाज में होता है बेइज़्ज़त
न जाने कब कौन घर में डाल ले डाका
घर वालों के नसीब में रह जाये फ़ाक़ा
उम्र भर की कमाई लुट गई पल भर में
रह गई गृहस्थी फँस करके दलदल में
कैसे पढ़ेगा बेटा कैसे होगी बेटी की शादी
कैसी दे गई ज़िन्दगी की बर्बादी

चुराने वाले तो भगवान की मूर्ति भी चुरा लेते हैं
भगवान के शरीर से गहने भी उतार लेते हैं
रिश्वतें लेकर या ग़लत काम करके
पढ़ाये लिखाये बच्चे बड़े अरमानों से
ग़लत कामों से कमाये पैसों से पढ़ाये गये बच्चे
रिश्वतों के पैसों से की गई शादियाँ
क्या भर पायेंगी उनके जीवन में
स्वास्थ्य, शान्ति, सुख और ख़ुशियाँ
और भी कितने ही अपराध हो रहे हैं देश में
घूमते हैं दानव देवताओं के वेश में
चोरी, डकैती, तस्करी, अपहरण, फिरौती
कौन सी बुरी बात समाज में नहीं होती
इस देश में राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर हुए
शिवाजी, प्रताप, बिस्मिल, आज़ाद, भगत सिंह जैसे वीर हुए
क्यों लोग आज उनके नाम पर पंक लगा रहे हैं
वीरों के बलिदानों से पाई आज़ादी के कलंक लगा रहे हैं
दे रहे हैं माता-पिता को दुख, अपना जीवन गँवा रहे हैं
क्यों लोग आज़ादी शब्द का ग़लत अर्थ लगा रहे हैं
ढेरों प्रश्न अभी भी शेष हैं जिन्होंने मुझे पल-पल सताया
ये कैसा दलदल है चहुँ ओर छाया
प्रश्न हल नहीं हो पा रहे, फँसी जा रही मैं
मैं जितना ही निकलूँ धँसी जा रही मैं
निगलती जा रही है मुझे प्रश्नों के दलदल की माया
अनगिनत प्रश्नों का दलदल है चहुँ ओर छाया

○○○

लोकतन्त्र का बजट

पेश होने वाला है लोकतन्त्र का बजट
जनता के राज्य में जनता का भविष्य होने वाला है प्रकट
लोग रेडियो और टी.वी. से जुड़ चुके हैं
सब काम छोड़कर सिर्फ़ एक तरफ़ मुड़ चुके हैं
जिज्ञासा है सबके मन में क्या होगा महँगा क्या होगा सस्ता
क्या मँहगाई से निकलने का निकलेगा कोई रस्ता
वित्तमंत्री का भाषण शुरू होने वाला है
लोग आँख-कान, दिमाग़ खोलकर सावधान की मुद्रा में बैठ चुके हैं
मंत्री जी के भाषण ने बजट सत्र का विमोचन किया
विपक्ष ने भी अपना कर्त्तव्य निभाने का आसन लिया
बैठ गये तनकर कुर्सी से चिपक कर
क्या प्रतिक्रिया करनी है मंत्री जी की एक-एक बात पर
कुछ आवश्यक कुछ अनावश्यक हस्तक्षेप तो करने पड़ेंगे
वरना जनता के लोग जिन्होंने उन्हें चुना है क्या कहेंगे
ख़ैर यह कहानी तो लम्बी चलती है
इसलिये संक्षेप में हुआ यह कि बजट भाषण समाप्त हुआ
किसी के मन में सुख किसी के मन में दुख व्याप्त हुआ
किसी को हुआ लाभ किसी को लगा हुई हानि
कोई काफ़ी ख़ुश किसी को याद आ रही नानी
किसको क्या मिला, कितना मिला, क्यों मिला
किसको नहीं मिला क्यों नहीं मिला उसका जीवन कितना हिला
इन सब बातों का आकलन प्रारम्भ हो चुका है
टी.वी., समाचार-पत्र, सड़क, दफ़्तरों के लोग सबको बोलने का काम मिल गया है
सब पार्टियों के नेता अपनी-अपनी बुद्धि और लाभ-हानि के अनुसार
अपनी आलोचनाओं का ज़ोर-शोर से कर रहे हैं प्रचार
चारों तरफ़ केवल इसी बात की चर्चा है

कितने बढ़े टैक्स कितना घटा-बढ़ा ख़र्चा है
जनता हर बजट पर न जाने क्या-क्या आशायें लगाती है
अपने मन में तरह-तरह की योजनायें बनाती है
लेकिन यह भी एक काला सच है कि
सारी आशायें पूरी नहीं होतीं
न ही कोई इन्सान सबको ख़ुश रख सकता है
शायर ने कहा है 'वादा न किया करते वादा तो किया होता'
लेकिन जनतंत्र में ऐसा होता है कि-
वादे तो बहुत करते हैं लेकिन वादा-ए-वफ़ा नहीं करते
बहुत से लोगों की आशाओं में फूल खिलते
और बहुत से लोगों की आशाओं पर तुषारापात होते
कुछ के हँसने और कुछ के रोने के बाद
साल भर के इन्तज़ार के बाद आया और गया बजट के बाद
गणतंत्र में जो राजा चुनें जायें वही होते हैं आबाद
रोज़ लगते हैं नारे 'ज़िन्दाबाद', 'ज़िन्दाबाद'
जनता ने जिन्हें चुना उनपर विश्वास करना फ़र्ज़ है उसका
उसका विश्वास टूटे या उसके साथ विश्वासघात हो
यह अपना दर्द है उसका, अपने हाथों ख़रीदा
कुर्सी पर बैठने के बाद सब हैं स्वार्थी
न कोई अपना भाई, न है भतीजा
न जाने क्या होगा बच्चों की पढ़ाई का
बीवी की रसोई की कढ़ाई का
सबका दिल कर रहा है, खट, खट, खटा-खट
दिल थाम लो...
पेश होने वाला है लोकतन्त्र का बजट

ooo

आज़ादी के नशे में लोग

आज़ादी की लड़ाई में लाखों लोग बुद्धिमान हो गये
झाँसी की रानी, शहीद मंगल पाण्डे जैसे हज़ारों वीर
आज़ादी के लिये कुरबान हो गये, भारत पर बलिदान हो गये
लाला लाजपत राय को गोरों की लाठियों ने मृत्यु तक पहुँचा दिया
गोविन्द वल्लभ पन्त का शरीर लाठियों से जर्जर हो गया
जालियाँवाला बाग़ के अमानवीय नरसंहार ने दुनिया को हिला दिया
किशोर बालक खुदीराम बोस, भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव और
'सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' कहते हुए
रामप्रसाद 'बिस्मिल' जैसे वीर हँसते हुए फाँसी पर चढ़ गये
एक जयचंद के विश्वासघात के कारण
चन्द्रशेखर आज़ाद अँग्रेजों की गोलियों से शहीद हो गये
'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा देने वाले
लोकमान्य तिलक कालापानी भेज दिये गये
अनगिनत लोग जेलों में मर गये
हज़ारों लोग लाठियों, गोलियों और अत्याचारों से अपंग हो गये
हमारे पूर्वजों ने आज़ाद भारत की नींव में अपनी लाशें बिछा दीं
9 अगस्त 1942 को बापू ने 'अँग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया
अनगिनत अनाम भारतवासियों ने आज़ादी के लिये ख़ून बहाया
उनकी आँखों में बस एक सपना था - भारत की आज़ादी
किसी को आज तक नहीं पता सुभाष चंद्र बोस कहाँ गये
अन्त में 15 अगस्त 1947 को अँग्रेज भारत छोड़ गये
देश आज़ाद हो गया, लोग आज़ाद हो गये
26 जनवरी 1950 को अपना संविधान लागू हो गया
लोगों को अपने मौलिक अधिकार मिल गए
लेकिन आज़ादी के नशे में लोग भूल गये कि अधिकारों के साथ
आज़ाद नागरिकों के कुछ मौलिक कर्त्तव्य भी होते हैं

इसी भूल ने देश में उपद्रव, आतंक, स्वच्छन्दता
और असुरक्षा का वातावरण बना दिया
बापू का रामराज्य का सपना चूर-चूर हो गया
देश तो आज़ाद हो गया पर
लोग कुर्सी, स्वार्थ, लालच, ईर्ष्या और भ्रष्टाचार के गुलाम हे गये
समाज और शासक अव्यवस्था के पर्याय बन गये
श्वेत धवल खादी के कपड़े काले कारनामों के पर्याय बन गये
जनता का शासन, जनता के लिये, जनता के द्वारा
बनकर रह गया सिर्फ़ एक झूठा नारा
जनता के अमूल्य वोटों द्वारा चुने गये प्रतिनिधि बन गए
अपदस्थ राजाओं से भी अधिक बड़े प्रभावशाली राजा
लोकतन्त्र अप्रत्यक्ष राजतन्त्र में बदल गया और देश की संसद जेल में
अपनी कुर्सी बचाने के लिए गाली, मुक्केबाजी तक उतर आये राजा
जिसके कारण संसद में काम नहीं हुआ
जनता के टैक्स का करोड़ों रुपया पानी में बह गया
अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के करतब
शर्म, कुण्ठा और क्रोध से हमारा सर झुका देते हैं
बढ़ रही है जनता में भावना असुरक्षा की
क्योंकि अधिकांश पुलिस पर तो जिम्मेवारी है राजाओं की रक्षा की
बाहुबलियों को बचायें या बाहुबलियों से जनता को बचायें
काश कोई देवदूत देश का मान बचाये, हमारा ध्वज सदा ऊँचा लहराये
बच जाये जनता अत्याचार, निर्दयता, तस्करी, अपहरण, फिरौती से
अस्मत बची रहे बेटियों की निर्मम बलात्कारियों से
भाषा, धर्म, जाति, ऊँच-नीच की भावना से मुक्त हो जायें लोग
पारस्परिक प्रेम, स्नेह, देशभक्ति से भर जायें लोग
बची रहे वो आज़ादी जिसके लिये बलिदान हुए असंख्य लोग

ooo

मैं कलियों सी मुस्काऊँ

दिल करता है बादल जैसी यहाँ-वहाँ उड़ जाऊँ
दिल चाहे बादल की तरह मैं इधर-उधर मुड़ जाऊँ
दिल चाहे पेड़ों पर चढ़कर, फल तोड़-तोड़ कर खाऊँ
दिल चाहे जंगल में जाकर, ज़ोर-ज़ोर से गाऊँ
दिल चाहे पर्वत के ऊपर बिछी हुई जो बर्फ़ की चादर
जाकर लेट जाऊँ मैं उसपर, गहरी नींद सो जाऊँ

दिल चाहे नदियों में तैरकर, उसके उद्‌गम तक जाऊँ
दिल चाहे सूरज को छू कर हँसती-हँसती वापिस आऊँ
दिल कहता जाकर चंदा के घर चाँदनी से नहा आऊँ
दिल चाहे धरती पर जाकर उपवन-उपवन घूम आऊँ
दिल चाहे मैं तितली बनकर, हर फूल से बातें कर आऊँ
दिल चाहे जंगल-जंगल जाकर सब पशु-पक्षियों से खेल आऊँ

दिल चाहे बस एकबार आ जाए मेरा बचपन प्यारा
दिल कहे न हो दर्दो-ग़म, रंजिश, बस मैं चिड़िया सी उड़ पाऊँ
दिल कहे नन्हा बच्चा बनकर, मैं कलियों सी मुस्काऊँ
किन्तु बताओ असम्भव को, मैं सम्भवइ कैसे कर पाऊँ
काश! एकबार बह जाए वक़्त की उल्टी धारा
एकबार फिर से छा जाये जीवन में उजियारा

○○○

- प्रकाशित कृतियाँ -

गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता-संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

कविता-संग्रह
मैं और मेरी ज़िन्दगी
विमला रावर सक्सेना

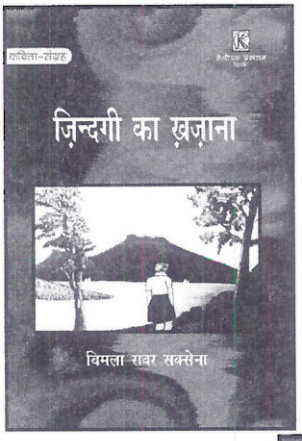
कविता-संग्रह
ज़िन्दगी का ख़ज़ाना
विमला रावर सक्सेना

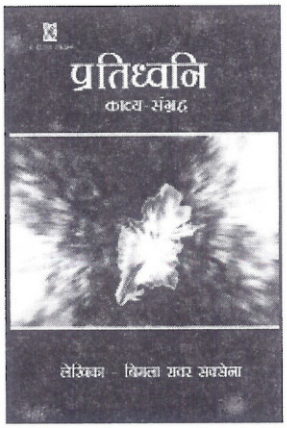
प्रतिध्वनि
काव्य-संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

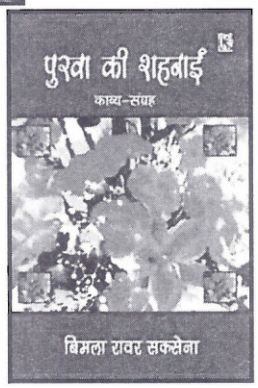
पुरवा की शहनाई
काव्य-संग्रह
विमला रावर सक्सेना

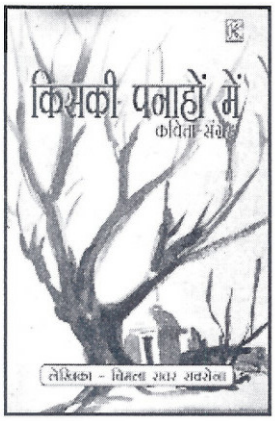
किसकी पनाहों में
कविता-संग्रह
लेखिका - विमला रावर सक्सेना

ज़िन्दगी और मुखौटे
विमला रावर सक्सेना

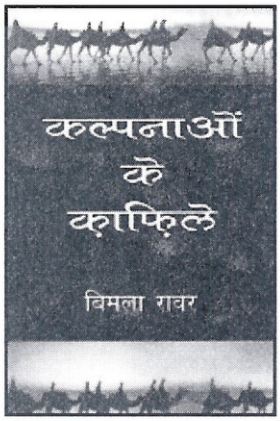
कल्पनाओं
के
काफ़िले
विमला रावर

अनुभव

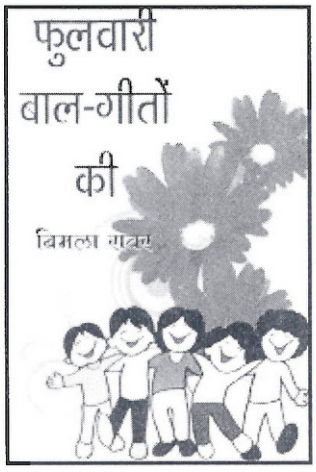
फुलवारी
बाल-गीतों
की
विमला रावर

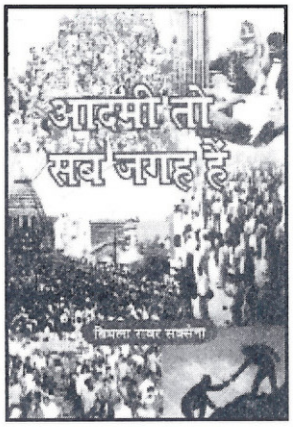
आदमी तो
सब जगह है
विमला रावर सक्सेना

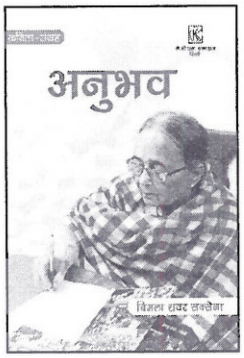
कविता-संग्रह
अनुभव
विमला रावर सक्सेना

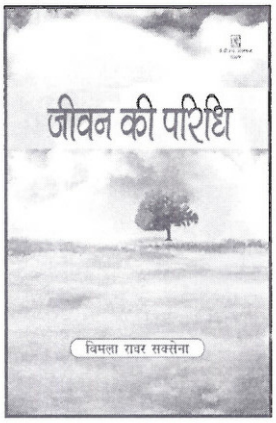
जीवन की परिधि
विमला रावर सक्सेना

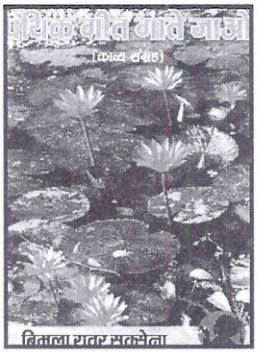
[काव्य-संग्रह]
विमला रावर सक्सेना

कविता-संग्रह
झरोखे जीवन के
विमला रावर सक्सेना

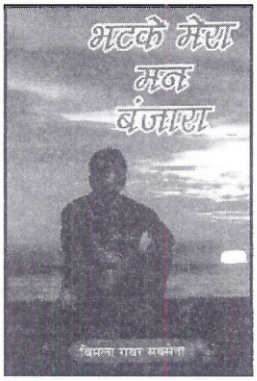
भटके मेरा मन बंजारा
विमला रावर सक्सेना

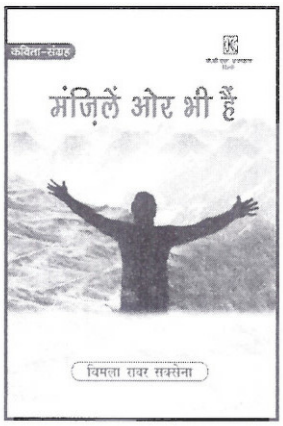
कविता-संग्रह
मंज़िलें और भी हैं
विमला रावर सक्सेना